श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी
में दर्ज नौवें पातशाह
श्री गुरु तेग बहादुर जी
की संपूर्ण बाणी
एवं शब्द अर्थ

१५ रागों में ५९ शब्द एवं नौवें महले के ५७ शलोक

नौवें पातशाह श्री गुरु तेग बहादुर जी की संपूर्ण बाणी

क्रमांक संख्या	राग	कुल शब्द	पन्ने
1.	गउड़ी	9	1 से 9
2.	आसा	1	10
3.	देवगंधारी	3	11 से 13
4.	बिहागड़ा	1	14
5.	सोरठि	12	15 से 26
6.	धनासरी	4	27 से 30
7.	जैतसरी	3	31 से 33
8.	टोडी	1	34
9.	तिलंग	3	35 से 37
10.	बिलावलु	3	38 से 40
11.	रामकली	3	41 से 43
12.	मारू	3	44 से 46
13.	बसंतु	5	47 से 51
14.	सारंग	4	52 से 55
15.	जैजावंती	4	56 से 59
	कुल शब्द	**59**	
16.	**नौवें महले के शलोक**	57	60 से 72
	कुल	**116**	

अंग २१९

१ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

अकाल पुरख एक है , जो सतगुर की क्रपा से मिलता हैं ॥

रागु गउड़ी महला ९ ॥

शब्द नंबर १ : राग गउड़ी : अंग २१९

साधो मन का मानु तिआगउ ॥
कामु क्रोधु संगति दुरजन की ता ते अहिनिसि भागउ ॥१॥ रहाउ॥

अर्थ: हे संत जनो! (अपने) मन का अहंकार छोड़ दो। काम और क्रोध (भी) बुरे मनुष्य की संगत (समान ही) हैं। इससे (भी) दिन रात (हर वक्त) परे रहो।1। रहाउ।

सुखु दुखु दोनो सम करि जानै अउरु मानु अपमाना ॥
हरख सोग ते रहै अतीता तिनि जगि ततु पछाना ॥१॥

अर्थ: (हे संत जनो! जो मनुष्य) सुख और दुख दोनों को एक समान जानता है, और जो आदर व निरादर को भी एक समान जानता है। (कोई मनुष्य उसका आदर करे तो भी परवाह नहीं,) और जो मनुष्य खुशी और गमी दोनों से निर्लिप रहता है (खुशी के समय अहंकार में नहीं आ जाता और गमी के वक्त घबरा नहीं जाता) उसने जगत में जीवन के भेद को समझ लिया है।1।

उसतति निंदा दोऊ तिआगै खोजै पदु निरबाना ॥
जन नानक इहु खेलु कठनु है किनहूं गुरमुखि जाना ॥२॥१॥

अर्थ: (हे संत जनो! उस मनुष्य ने अस्लियत ढूँढ ली है जो) ना किसी की खुशामद करता है ना ही किसी की निंदा, और जो उस आत्मिक अवस्था को सदा तलाश करता है जहां कोई वासना छू नहीं सकती। (पर) हे नानक! ये (जीवन-) खेल (खेलनी) मुश्किल है। कोई विरला मनुष्य ही गुरु की शरण पड़ कर इसे समझता है।2।1।

शब्द नंबर २ : राग गउड़ी : अंग २१९

साधो रचना राम बनाई ॥
इकि बिनसै इक असथिरु मानै अचरजु लखिओ न जाई ॥१॥ रहाउ॥

अर्थ: हे संत जनो! परमात्मा ने (जगत की ये आश्चर्यजनक) रचना रच दी है (कि) एक मनुष्य (तो) मरता है (पर) दूसरा मनुष्य (उसे मरता देख के भी अपने आप को) सदा टिके रहने वाला समझता है। ये एक आश्चर्यजनक तमाशा है जो बयान नहीं किया जा सकता।1। रहाउ।

काम क्रोध मोह बसि प्रानी हरि मूरति बिसराई ॥
झूठा तनु साचा करि मानिओ जिउ सुपना रैनाई ॥१॥

अर्थ: (हे संत जनो!) मनुष्य काम के, क्रोध के, मोह के काबू में रहता है और परमात्मा की हस्ती को भुलाए रखता है। ये शरीर सदा साथ रहने वाला नहीं है, पर मनुष्य इसे सदा कायम रहने वाला समझता है, जैसे रात को (सोते समय जो) सपना (आता है मनुष्य नींद की हालत में उस सपने को असली घटित हो रही बात समझता है)।1।

जो दीसै सो सगल बिनासै जिउ बादर की छाई ॥
जन नानक जगु जानिओ मिथिआ रहिओ राम सरनाई ॥२॥२॥

अर्थ: (हे संत जनो!) जैसे बादल की छाया (सदा एक जगह टिकी नहीं रह सकती, वैसे ही) जो कुछ (जगत में) दिखाई दे रहा है ये सब कुछ (अपने-अपने समय में) नाश हो जाता है। हे दास नानक! (जिस मनुष्य ने) जगत को नाशवान समझ लिया है, वह (सदा स्थिर रहने वाले) परमात्मा की शरण पड़ा रहता है।2।2।

शब्द नंबर ३ : राग गउड़ी : अंग २१९

प्रानी कउ हरि जसु मनि नही आवै ॥
अहिनिसि मगनु रहै माइआ मै कहु कैसे गुन गावै ॥१॥ रहाउ॥

अर्थ: (हे भाई!) मनुष्य को परमात्मा की महिमा (अपने) मन में (बसानी) नहीं आती। (हे भाई!) बताओ, वह मनुष्य कैसे परमात्मा के गुण गा सकता है जो दिन रात माया (के मोह) में मस्त रहता है?।1। रहाउ।

पूत मीत माइआ ममता सिउ इह बिधि आपु बंधावै ॥
म्रिग त्रिसना जिउ झूठो इहु जग देखि तासि उठि धावै ॥१॥

अर्थ: (हे भाई! माया के मोह में मस्त रहने वाला मनुष्य) पुत्र-मित्र-माया (आदि) की ममता से बंधा रहता है, और इस तरह अपने आप को (मोह के बंधनों में) बांधे रखता है। (माया-ग्रसित मनुष्य ये नहीं समझता कि) ये जगत (तो) ठगनीरे की तरह (ठगी ही ठगी है, जैसे हिरन मारीचिका को देख कर उसकी ओर दौड़ता और भटक भटक के मरता है, वैसे ही मनुष्य इस जगत को) देख कर इसकी ओर (सदा) दौड़ता रहता है (और आत्मिक मौत अपनाता है)।1।

भुगति मुकति का कारनु सुआमी मूड़ ताहि बिसरावै ॥
जन नानक कोटन मै कोऊ भजनु राम को पावै ॥२॥३॥

अर्थ: मूर्ख मनुष्य उस मालिक प्रभु को भुलाए रखता है जो दुनिया के सुखों और भोगों का भी मालिक है और जो मोक्ष भी देने वाला है। हे दास नानक! (कह:) करोड़ों में कोई विरला मनुष्य ही होता है जो (जगत ठगनीरे के मोह से बच के) परमात्मा की भक्ति प्राप्त करता है।2।3।

शब्द नंबर ४ : राग गउड़ी : अंग २१९

साधो इहु मनु गहिओ न जाई ॥
चंचल त्रिसना संगि बसतु है या ते थिरु न रहाई ॥१॥ रहाउ॥

अर्थ: हे संत जनो! ये मन वश में नहीं किया जा सकता, (क्योंकि ये मन सदा) अनेक हाव-भाव करने वाली तृष्णा के साथ बसा रहता है, इस वास्ते ये कभी टिक के नहीं रहता।1। रहाउ।

कठन करोध घट ही के भीतरि जिह सुधि सभ बिसराई ॥
रतनु गिआनु सभ को हिरि लीना ता सिउ कछु न बसाई ॥१॥

अर्थ: (हे संत जनो!) वश में ना आ सकने वाला क्रोध भी इसी हृदय में ही बसता है, जिस ने (मनुष्य को भली तरफ की) सारी होश भुला दी है। (क्रोध ने) हरेक मनुष्य का श्रेष्ठ ज्ञान चुरा लिया है, उसके साथ किसी की कोई पेश नहीं जाती।1।

जोगी जतन करत सभि हारे गुनी रहे गुन गाई ॥
जन नानक हरि भए दइआला तउ सभ बिधि बनि आई ॥२॥४॥

अर्थ: सारे जोगी (इस मन को काबू करने के) यत्न करते करते थक गए हैं, विद्वान मनुष्य अपनी विद्या की तारीफें करते थक गए (ना योग साधन, ना विद्या- मन को कोई भी वश में लाने के समर्थ नहीं)। हे दास नानक! जब प्रभु जी दयावान होते हैं (इस मन को काबू में रखने के) सारे ही ढंग तरीके सफल हो जाते हैं।2।4।

शब्द नंबर ५ : राग गउड़ी : अंग २१९

साधो गोबिंद के गुन गावउ ॥
मानस जनमु अमोलकु पाइओ बिरथा काहि गवावउ ॥१॥ रहाउ॥

अर्थ: हे संत जनो! (सदा) गोबिंद के गुण गाते रहा करो। ये बड़ा कीमती मानव जन्म मिला है, इसे व्यर्थ क्यूँ गवाते हो?।1। रहाउ

पतित पुनीत दीन बंध हरि सरनि ताहि तुम आवउ ॥
गज को त्रासु मिटिओ जिह सिमरत तुम काहे बिसरावउ ॥१॥

अर्थ: (हे संत जनो!) परमात्मा उन लोगों को भी पवित्र करने वाला है जो विकारों में गिरे हुए होते हैं, वह हरि गरीबों का सहयोगी है। तुम भी उसी की शरण पड़ो। जिसका स्मरण करके हाथी का डर मिट गया था, तुम उसे क्यूँ भुला रहे हो?।1।

तजि अभिमान मोह माइआ फुनि भजन राम चितु लावउ ॥
नानक कहत मुकति पंथ इहु गुरमुखि होइ तुम पावउ ॥२॥५॥

अर्थ: (हे संत जनो!) अहंकार दूर करके और माया का मोह दूर करके अपना चित्त परमात्मा के भजन में जोड़े रखो। नानक कहता है: विकारों से निजात पाने का यही रास्ता है, पर गुरु की शरण पड़ कर ही तुम ये रास्ता ढूँढ सकोगे।2।5।

शब्द नंबर ६ : राग गउड़ी : अंग २१९

कोऊ माई भूलिओ मनु समझावै ॥
बेद पुरान साध मग सुनि करि निमख न हरि गुन गावै ॥१॥ रहाउ॥

अर्थ: हे (मेरी) माँ! (माया के मोह से नाको नाक भरे हुए संसार जंगल में मेरा मन कुमार्ग पर पड़ गया है, मुझे) कोई (ऐसा गुरमुख मिल जाए जो मेरे इस) गलत रास्ते पर पड़े हुए मन को मति दे (समझा दे)। (ये भूला हुआ मन) वेद-पुराण (आदि धर्म-पुस्तकों और) संत जनों के उपदेश सुन के (भी) रत्ती भर समय के लिए भी परमात्मा के गुण नहीं गाता।1। रहाउ।

दुरलभ देह पाइ मानस की बिरथा जनमु सिरावै ॥
माइआ मोह महा संकट बन ता सिउ रुच उपजावै ॥१॥

अर्थ: (हे मेरी माँ! ये मन ऐसा कुमार्ग पर पड़ा हुआ है कि) बड़ी मुश्किल से मिल सकने वाले मानव शरीर प्राप्त करके भी इस जन्म को व्यर्थ गुजार रहा है। (हे माँ! ये संसार) जंगल माया के मोह से नाको नाक भरा पड़ा है (और मेरा मन) इस (जंगल से ही) प्रेम बना रहा है।1।

अंतरि बाहरि सदा संगि प्रभु ता सिउ नेहु न लावै ॥
नानक मुकति ताहि तुम मानहु जिह घटि रामु समावै ॥२॥६॥

अर्थ: (हे मेरी माँ! जो) परमात्मा (हरेक जीव के) अंदर व बाहर हर समय बसता है उससे (ये मेरा मन) प्यार नहीं डालता। हे नानक! (कह: माया के मोह से भरपूर संसार जंगल में से) खलासी तुम उसी मनुष्य को (मिली) समझो जिसके हृदय में परमात्मा बस रहा है।2।6।

अंग २२०

शब्द नंबर ७ : राग गउड़ी : अंग २२०

साधो राम सरनि बिसरामा ॥
बेद पुरान पड़े को इह गुन सिमरे हरि को नामा ॥१॥ रहाउ॥

अर्थ: हे संत जनो! परमात्मा की शरण पड़ने से ही (विकारों की भटकना से) शांति प्राप्त होती है। वेद पुराण (आदि धार्मिक पुस्तकों) पढ़ने का यही लाभ (होना चाहिए) कि मनुष्य परमात्मा का नाम स्मरण करता रहे।1। रहाउ।

लोभ मोह माइआ ममता फुनि अउ बिखिअन की सेवा ॥
हरख सोग परसै जिह नाहनि सो मूरति है देवा ॥१॥

अर्थ: (हे संत जनो!) लोभ, माया का मोह, अपनत्व और विषियों का सेवन, खुशी, गमी- (इनमें से कोई भी) जिस मनुष्य को छू नहीं सकता (जिस मनुष्य पर अपना जोर नहीं डाल सकता) वह मनुष्य परमात्मा का रूप है।1।

सुरग नरक अम्रित बिखु ए सभ तिउ कंचन अरु पैसा ॥
उसतति निंदा ए सम जा कै लोभु मोहु फुनि तैसा ॥२॥

अर्थ: (हे संत जनो! वह मनुष्य परमात्मा का रूप है जिसे) स्वर्ग एवं नर्क, अमृत और जहर एक जैसे प्रतीत होते हैं। जिसे सोना व तांबा एक समान लगता है। जिसके हृदय में स्तुति और निंदा भी एक जैसे हैं (कोई उसकी उपमा करे, या कोई उसकी निंदा करे- उसके लिए एक समान हैं)। जिसके हृदय में लोभ भी प्रभाव नहीं डाल सकता, मोह भी असर नहीं कर सकता।2।

दुखु सुखु ए बाधे जिह नाहनि तिह तुम जानउ गिआनी ॥
नानक मुकति ताहि तुम मानउ इह बिधि को जो प्रानी ॥३॥७॥

अर्थ: (हे संत जनो!) तुम उस मनुष्य को परमात्मा के साथ गहरी सांझ डाल के रखने वाला समझो, जिसे ना कोई दुख ना ही कोई सुख (अपने प्रभाव में) बाँध सकता है। हे नानक! (कह: हे संत जनो! लोभ, मोह, दुख सुख आदि से) खलासी उस मनुष्य को (मिली) मानो, जो मनुष्य इस किस्म की जीवन-युक्ति वाला है।3।7।

शब्द नंबर ८ : राग गउड़ी : अंग २२०

मन रे कहा भइओ तै बउरा ॥
अहिनिसि अउध घटै नही जानै भइओ लोभ संगि हउरा ॥१॥ रहाउ॥

अर्थ: हे (मेरे) मन! तू कहां (लोभ आदि में फंस के) पागल हो रहा है? (हे भाई!) दिन रात उम्र घटती रहती है, पर मनुष्य ये बात समझता नहीं और लोभ में फंस के कमजोर आत्मिक जीवन वाला बनता जाता है।1। रहाउ।

जो तनु तै अपनो करि मानिओ अरु सुंदर ग्रिह नारी ॥
इन मैं कछु तेरो रे नाहनि देखो सोच बिचारी ॥१॥

अर्थ: हे (मेरे) मन! जो (ये) शरीर, जिसे तू अपना करके समझ रहा है, और घर की सुंदर स्त्री को तू अपनी मान रहा है, इनमें से कोई भी तेरा (सदा निभने वाला साथी) नहीं है, सोच के देख ले, विचार के देख ले।1।

रतन जनमु अपनो तै हारिओ गोबिंद गति नही जानी ॥
निमख न लीन भइओ चरनन सिंउ बिरथा अउध सिरानी ॥२॥

अर्थ: हे (मेरे) मन! जैसे जुआरी जूए में बाजी हारता है, (वैसे ही) तू अपना कीमती मानव जनम हार रहा है। क्योंकि तूने परमात्मा के साथ मिलाप की अवस्था की कद्र नहीं पाई। तू रक्ती भर समय के लिए भी गोबिंद प्रभु के चरणों में नहीं जुड़ता, तू व्यर्थ उम्र गुजार रहा है।2।

कहु नानक सोई नरु सुखीआ राम नाम गुन गावै ॥
अउर सगल जगु माइआ मोहिआ निरभै पदु नही पावै ॥३॥८॥

अर्थ: हे नानक! कहः वही मनुष्य सुखी जीवन वाला है जो परमात्मा का नाम (जपता है, जो) परमात्मा के गुण गाता है। बाकी का सारा जहान (जो) माया के मोह में फंसा रहता है (वह सहमा रहता है, वह) उस आत्मिक अवस्था पर नहीं पहुँचता, जहां कोई डर छू नहीं सकता।3।8।

शब्द नंबर ९ : राग गउड़ी : अंग २२०

नर अचेत पाप ते डरु रे ॥
दीन दइआल सगल भै भंजन सरनि ताहि तुम परु रे ॥१॥ रहाउ॥

अर्थ: हे गाफिल मनुष्य! पापों से बचा रह। (और इन पापों से बचने के वास्ते उस) परमात्मा की शरण पड़ा रह, जो गरीबों पर दया करने वाला है, और सारे डर दूर करने वाला है।1। रहाउ।

बेद पुरान जास गुन गावत ता को नामु हीऐ मो धरु रे ॥
पावन नामु जगति मै हरि को सिमरि सिमरि कसमल सभ हरु रे ॥१॥

अर्थ: (हे गाफिल मनुष्य!) उस परमात्मा का नाम अपने हृदय में परोए रख, जिसके गुण वेद पुराण (आदि धर्म पुस्तकें) गा रहे हैं। (हे गाफिल मनुष्य! पापों से बचा के) पवित्र करने वाला जगत में परमात्मा का नाम (ही) है, तू उस परमात्मा को स्मरण कर-कर के (अपने अंदर से) सारे पाप दूर कर ले।1।

मानस देह बहुरि नह पावै कछू उपाउ मुकति का करु रे ॥
नानक कहत गाइ करुना मै भव सागर कै पारि उतरु रे ॥२॥९॥२५१॥

अर्थ: (हे गाफिल मनुष्य!) तू ये मानव शरीर फिर कभी नहीं पा सकेगा (इसे क्यूँ पापों में लगा के गवा रहा है? यही समय है, इन पापों से) मुक्ति प्राप्त करने का। कोई इलाज कर ले। तुझे नानक कहता है: तरस-रूप परमात्मा के गुण गा के संसार समुंदर पार हो जा।2।9।251।

अंग ४११

੧ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

अकाल पुरख एक है , जो सतगुर की क्रपा से मिलता हैं ॥

रागु आसा महला ९ ॥

शब्द नंबर १० : राग आसा : अंग ४११

बिरथा कहउ कउन सिउ मन की ॥
लोभि ग्रसिओ दस हू दिस धावत आसा लागिओ धन की ॥१॥ रहाउ॥

अर्थ: (हे भाई!) मैं इस (मानव) मन की बुरी हालत किसे बताऊँ? (हरेक मनुष्य का यही हाल है), लोभ में फसा हुआ ये मन दसों दिशाओं में दौड़ता है, इसे धन जोड़ने की तृष्णा लगी रहती है।1। रहाउ।

सुख कै हेति बहुतु दुखु पावत सेव करत जन जन की ॥
दुआरहि दुआरि सुआन जिउ डोलत नह सुध राम भजन की ॥१॥

अर्थ: (हे भाई!) सुख हासिल करने के लिए (ये मन) जगह-जगह की खुशामद करता फिरता है (और इस तरह सुख की जगह बल्कि) दुख सहता है। कुत्ते की तरह हरेक के दर पर भटकता फिरता है, इसे परमात्मा का भजन करने की कभी नहीं सूझती।1।

मानस जनम अकारथ खोवत लाज न लोक हसन की ॥
नानक हरि जसु किउ नही गावत कुमति बिनासै तन की ॥२॥१॥२३३॥

अर्थ: (हे भाई! लोभ में फसा हुआ जीव) अपना मानव जनम व्यर्थ ही गवा लेता है, (इसके लालच के कारण) लोगों द्वारा किए जा रहे हँसी-मजाक से भी इसे शर्म नहीं आती। हे नानक! (कह: हे जीव!) तू परमात्मा की महिमा क्यूँ नही करता? (महिमा की इनायत से ही) तेरी ये खोटी मति दूर हो सकेगी।2।1।233।

अंग ५३६

१ਓ सतिगुर प्रसादि ॥

अकाल पुरख एक है , जो सतगुर की क्रपा से मिलता हैं ॥

रागु देवगंधारी महला ९ ॥

शब्द नंबर ११ : रागु देवगंधारी : अंग ५३६

यह मनु नैक न कहिओ करै ॥
सीख सिखाइ रहिओ अपनी सी दुरमति ते न टरै ॥१॥ रहाउ॥

अर्थ: हे भाई! ये मन रत्ती भर भी मेरा कहा नहीं मानता। मैं अपनी ओर से इसे शिक्षा दे दे के थक गया हूँ, फिर भी यह खोटी मति से नहीं हटता।1। रहाउ।

मदि माइआ कै भइओ बावरो हरि जसु नहि उचरै ॥
करि परपंचु जगत कउ डहकै अपनो उदरु भरै ॥१॥

अर्थ: हे भाई! माया के नशे में ये मन झल्ला हुआ पड़ा है, ये कभी महिमा की वाणी नहीं उचारता, दिखावा करके दुनिया को ठगता रहता है, और, (ठगी से एकत्र किए हुए धन द्वारा) अपना पेट भरता रहता है।1।

सुआन पूछ जिउ होइ न सूधो कहिओ न कान धरै ॥
कहु नानक भजु राम नाम नित जा ते काजु सरै ॥२॥१॥

अर्थ: हे भाई! कुत्ते की पूँछ की तरह ये मन कभी सीधा नहीं होता, (किसी की भी) दी हुई शिक्षा को ध्यान से नहीं सुनता। हे नानक! (दुबारा इसे) कह: (हे मन!) परमात्मा के नाम का भजन किया कर जिसकी इनायत से तेरा जनम-उद्देश्य हल हो जाए।2।1।

शब्द नंबर १२ : रागु देवगंधारी : अंग ५३६

सभ किछु जीवत को बिवहार ॥
मात पिता भाई सुत बंधप अरु फुनि ग्रिह की नारि ॥१॥ रहाउ॥

अर्थ: हे भाई! माता, पिता, भाई, पुत्र, रिश्तेदार और घर की पत्नी भी - ये सब कुछ जीवन का ही मेल-जोल है।1। रहाउ।

तन ते प्रान होत जब निआरे टेरत प्रेति पुकारि ॥
आध घरी कोऊ नहि राखै घर ते देत निकारि ॥१॥

अर्थ: हे भाई! (मौत आने पर) जब प्राण शरीर से अलग हो जाते हैं, तब (ये सारे संबंधी) ऊँचा ऊँचा कहते हैं कि ये गुजर चुका है गुजर चुका है। कोई भी संबंधी आधी घड़ी के लिए भी (उसको) घर में नहीं रखता, घर से निकाल देते हैं।1।

म्रिग त्रिसना जिउ जग रचना यह देखहु रिदै बिचारि ॥
कहु नानक भजु राम नाम नित जा ते होत उधार ॥२॥२॥

अर्थ: हे भाई! अपने हृदय में विचार करके देख लो, ये जगत-खेल मृग-तृष्णा (ठग-नीरे) की तरह है (प्यासे हिरन के पानी के पीछे दौड़ने की तरह मनुष्य माया के पीछे दौड़-दौड़ के आत्मिक मौत मर जाता है)। हे नानक! कह: (हे भाई!) सदा परमात्मा के नाम का भजन किया कर जिसकी इनायत से (संसार के मोह से) पार-उतारा होता है।2।2।

शब्द नंबर १२ : रागु देवगंधारी : अंग ५३६

जगत मै झूठी देखी प्रीति ॥
अपने ही सुख सिउ सभ लागे किआ दारा किआ मीत ॥१॥ रहाउ॥

अर्थ: हे भाई! दुनियां में (संबन्धियों का) प्यार मैंने झूठा ही देखा है। चाहे स्त्री है चाहे मित्र हैं; सारे ही अपने-अपने सुख के खातिर ही (मनुष्य के) साथ चलते फिरते हैं।1। रहाउ।

मेरउ मेरउ सभै कहत है हित सिउ बाधिओ चीत ॥
अंति कालि संगी नह कोऊ इह अचरज है रीति ॥१॥

अर्थ: हे भाई! (सबका) चित्त मोह से बँधा होता है (उस मोह के कारण) हर कोई यही कहता है 'ये मेरा है ये मेरा है'। पर, आखिरी वक्त पर कोई भी साथी नहीं बनता। (जगत की) ये आश्चर्यजनक रीति चली आ रही है।1।

मन मूरख अजहू नह समझत सिख दै हारिओ नीत ॥
नानक भउजलु पारि परै जउ गावै प्रभ के गीत ॥२॥३॥६॥३८॥४७॥

अर्थ: हे मूर्ख मन! तुझे मैं सदा शिक्षा दे दे के थक गया हूँ, तू अभी भी नहीं समझता। हे नानक! (कह: हे भाई!) जब मनुष्य परमात्मा की महिमा के गीत गाता है, तब संसार समुंदर से पार लांघ जाता है।2।3।6।38।47।

अंग ५३७

१ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

अकाल पुरख एक है , जो सतगुर की क्रपा से मिलता हैं ॥

राग बिहागड़ा महला ९ ॥

शब्द नंबर १४ : राग बिहागड़ा : अंग ५३७

हरि की गति नहि कोऊ जानै ॥
जोगी जती तपी पचि हारे अरु बहु लोग सिआने ॥१॥ रहाउ॥

अर्थ: हे भाई! अनेक योगी, अनेक तपी, व अन्य बहुत सारे समझदार मनुष्य खप-खप के हार गए हैं, पर कोई भी मनुष्य यह नहीं जान सकता कि परमात्मा कैसा है।1। रहाउ।

छिन महि राउ रंक कउ करई राउ रंक करि डारे ॥
रीते भरे भरे सखनावै यह ता को बिवहारे ॥१॥

अर्थ: हे भाई! वह परमात्मा एक छिन में कंगाल को राजा बना देता है, और, राजे को कंगाल कर देता है, खाली बर्तनों को भर देता है और भरों को खाली कर देता है (गरीबों को अमीर और अमीरों को गरीब बना देता है) - यह उसका नित्य का काम है।1।

अपनी माइआ आपि पसारी आपहि देखनहारा ॥
नाना रूपु धरे बहु रंगी सभ ते रहै निआरा ॥२॥

अर्थ: (हे भाई! दिखाई देते जगत-रूप तमाशे में) परमात्मा ने अपनी माया खुद बिखेरी हुई है, वह खुद ही इसकी संभाल कर रहा है। वह अनेक रंगों का मालिक प्रभु कई तरह के रूप धार लेता है, और सारे ही रूपों से अलग भी रहता है।2।

अगनत अपारु अलख निरंजन जिह सभ जगु भरमाइओ ॥
सगल भरम तजि नानक प्राणी चरनि ताहि चितु लाइओ ॥३॥१॥२॥

अर्थ: हे भाई! उस परमात्मा के गुण गिने नहीं जा सकते, वह बेअंत है, वह अदृष्य है, वह निर्लिप है, उस परमात्मा ने ही सारे जगत को (माया की) भटकना में डाला हुआ है। हे नानक! (कह:) जिस मनुष्य ने उसके चरणों में चित्त जोड़ा है, इस माया की सारी भटकनें त्याग के ही जोड़ा है।3।1।2।

अंग ६३१

ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

अकाल पुरख एक है , जो सतगुर की क्रपा से मिलता हैं ॥

सोरठि महला ९ ।।

शब्द नंबर १५ : राग सोरठि: अंग ६३१

रे मन राम सिउ करि प्रीति ॥
स्रवन गोबिंद गुनु सुनउ अरु गाउ रसना गीति ॥१॥ रहाउ॥

अर्थ: हे (मेरे) मन! परमात्मा से प्यार बना। (हे भाई!) कानों से परमात्मा की स्तुति सुना कर, और, जीभ से परमात्मा (की महिमा) के गीत गाया कर। रहाउ।

करि साधसंगति सिमरु माधो होहि पतित पुनीत ॥
कालु बिआलु जिउ परिओ डोलै मुखु पसारे मीत ॥१॥

अर्थ: हे भाई! गुरमुखों की संगत किया कर, परमात्मा का स्मरण करता रह। (नाम-जपने की इनायत से) विकारी भी पवित्र बन जाते हैं। हे मित्र! (इस काम में आलस ना कर, देख) मौत साँप की तरह मुँह खोल के घूम रही है।1।

आजु कालि फुनि तोहि ग्रसि है समझि राखउ चीति ॥
कहै नानकु रामु भजि लै जातु अउसरु बीत ॥२॥१॥

अर्थ: हे भाई! अपने चित्त में ये बात समझ ले कि (ये मौत) तुझे भी जल्दी ही हड़प कर लेगी। नानक (तुझे) कहता है: (अब अभी वक्त है) परमात्मा का भजन कर ले, ये वक्त गुजरता जा रहा है।2।1।

शब्द नंबर १६ : राग सोरठि: अंग ६३१

मन की मन ही माहि रही ॥
ना हरि भजे न तीरथ सेवे चोटी कालि गही ॥१॥ रहाउ॥

अर्थ: (हे भाई! देखो, माया धारी के दुर्भाग्य! उस के) मन की आस मन में ही रह गई। ना उसने परमात्मा का भजन किया, ना ही उसने संतजनों की सेवा की, और, मौत ने चोटी आ पकड़ी।1। रहाउ।

दारा मीत पूत रथ स्मपति धन पूरन सभ मही ॥
अवर सगल मिथिआ ए जानउ भजनु रामु को सही ॥१॥

अर्थ: हे भाई! स्त्री, मित्र, पुत्र, गाड़ियां, माल असबाब, धन पदार्थ, सारी ही धरती - ये सब कुछ नाशवान समझो। परमात्मा का भजन (ही) असल (साथी) है।1।

फिरत फिरत बहुते जुग हारिओ मानस देह लही ॥
नानक कहत मिलन की बरीआ सिमरत कहा नही ॥२॥२॥

अर्थ: हे भाई! कई युग (जोनियों में) भटक-भटक के तू थक गया था। (अब) तुझे मनुष्य का शरीर मिला है। नानक कहता है: (हे भाई! परमात्मा को) मिलने की यही बारी है, अब तू स्मरण क्यों नहीं करता?।2।2।

शब्द नंबर १७ : राग सोरठि: अंग ६३१

मन रे कउनु कुमति तै लीनी ॥
पर दारा निंदिआ रस रचिओ राम भगति नहि कीनी ॥१॥ रहाउ॥

अर्थ: हे मन! तूने कैसी कुबुद्धि ले ली है? तू पराई स्त्री, पराई निंदा के रस में मस्त रहता है। परमात्मा की भक्ति तूने (कभी) नहीं की।1। रहाउ।

मुकति पंथु जानिओ तै नाहनि धन जोरन कउ धाइआ ॥
अंति संग काहू नही दीना बिरथा आपु बंधाइआ ॥१॥

अर्थ: हे भाई! तूने विकारों से खलासी पाने का रास्ता (अभी तक) नहीं समझा, धन एकत्र करने के लिए तू सदा दौड़-भाग करता रहा है। (दुनिया के पदार्थों में से) किसी ने भी आखिर में किसी का साथ नहीं दिया। तूने व्यर्थ ही अपने आप को (माया के मोह में) जकड़ रखा है।1।

ना हरि भजिओ न गुर जनु सेविओ नह उपजिओ कछु गिआना ॥
घट ही माहि निरंजनु तेरै तै खोजत उदिआना ॥२॥

अर्थ: हे भाई! (अभी तक) ना तूने परमात्मा की भक्ति की है, ना गुरु की शरण पड़ा है, ना ही तेरे अंदर आत्मिक जीवन की सूझ आई है। माया से निर्लिप प्रभु तेरे हृदय में बस रहा है, पर तू (बाहर) जंगलों में उसे तलाश रहा है।2।

बहुतु जनम भरमत तै हारिओ असथिर मति नही पाई ॥
मानस देह पाइ पद हरि भजु नानक बात बताई ॥३॥३॥

अर्थ: हे भाई! अनेक जन्मों में भटक-भटक के तूने (मनुष्य जन्म की बाजी) हार ली है, तूने ऐसी अक्ल नहीं सीखी जिसकी इनायत से (जन्मों के चक्करों में से) तुझे अडोलता हासिल हो सके। हे नानक! (कह: हे भाई! गुरु ने तो ये) बात समझाई है कि मानव जन्म का (ऊँचा) दर्जा हासिल करके परमात्मा का भजन कर।3।3।

शब्द नंबर १८ : राग सोरठिः अंग ६३२

मन रे प्रभ की सरनि बिचारो ॥
जिह सिमरत गनका सी उधरी ता को जसु उर धारो ॥१॥ रहाउ॥

अर्थ: हे मन! परमात्मा की शरण पड़ कर उसके नाम का ध्यान धरा कर। जिस परमात्मा का स्मरण करके गनिका (विकारों में डूबने से) बच गई थी तू भी, (हे भाई!) उसकी महिमा अपने दिल में बसाए रख। रहाउ।

अटल भइओ ध्रूअ जा कै सिमरनि अरु निरभै पदु पाइआ ॥
दुख हरता इह बिधि को सुआमी तै काहे बिसराइआ ॥१॥

अर्थ: हे भाई! जिस परमात्मा के स्मरण से ध्रूव सदा के लिए अटल हो गया है और उसने निर्भयता का आत्मिक दर्जा हासिल कर लिया था, तूने उस परमात्मा को क्यों भुलाया हुआ है, वह तो इस तरह के दुखों का नाश करने वाला है।1।

जब ही सरनि गही किरपा निधि गज गराह ते छूटा ॥
महमा नाम कहा लउ बरनउ राम कहत बंधन तिह तूटा ॥२॥

अर्थ: हे भाई! जिस वक्त ही (हाथी ने) कृपा के समुंदर परमात्मा का आसरा लिया वह हाथी (गज) तेंदुए की पकड़ से निकल गया। मैं कहाँ तक परमात्मा के नाम की बड़ाई बताऊँ? परमात्मा का नाम उचार के उस (हाथी) के बंधन टूट गए थे।2।

अजामलु पापी जगु जाने निमख माहि निसतारा ॥
नानक कहत चेत चिंतामनि तै भी उतरहि पारा ॥३॥४॥

अर्थ: हे भाई! सारा जगत जानता है कि अजामल विकारी था (परमात्मा के नामका स्मरण करके) पलक झपकने जितने समय में ही उसका पार-उतारा हो गया था। नानक कहता है: (हे भाई! तू) सारी चितवनियां पूरी करने वाले परमात्मा का नाम स्मरण किया कर। तू भी (संसार समुंदर से) पार लांघ जाएगा।3।4।

शब्द नंबर १९ : राग सोरठि: अंग ६३२

प्रानी कउनु उपाउ करै ॥
जा ते भगति राम की पावै जम को त्रासु हरै ॥१॥ रहाउ॥

अर्थ: (हे भाई! बता) मनुष्य वह कौन से उपाय करे जिससे परमात्मा की भक्ति प्राप्त कर सके, और जम का डर दूर कर सके।1। रहाउ।

कउनु करम बिदिआ कहु कैसी धरमु कउनु फुनि करई ॥
कउनु नामु गुर जा कै सिमरै भव सागर कउ तरई ॥१॥

अर्थ: (हे भाई!) बता, वह कौन से (धार्मिक) कर्म हैं, वह कैसी विद्या है, वह कौन सा धर्म है (जो मनुष्य) करे; वह कौन सा गुरु का (बताया) नाम है जिसका स्मरण करने से मनुष्य संसार समुंदर से पार लांघ सकता है।1।

कल मै एकु नामु किरपा निधि जाहि जपै गति पावै ॥
अउर धरम ता कै सम नाहनि इह बिधि बेदु बतावै ॥२॥

अर्थ: (हे भाई!) कृपा के खजाने परमात्मा का नाम ही जगत में है जिसको (जो मनुष्य) जपता है (वह) उच्च आत्मिक अवस्था हासिल कर लेता है। और किसी तरह के भी कोई कर्म उस (नाम) के बराबर नहीं हैं- वेद (भी) यह युक्ति बताता है।2।

सुखु दुखु रहत सदा निरलेपी जा कउ कहत गुसाई ॥
सो तुम ही महि बसै निरंतरि नानक दरपनि निआई ॥३॥५॥

अर्थ: हे नानक! (कह: हे भाई!) जिसे (जगत) धरती का पति (गोसाई) कहता है वह सुखों दुखों से अलग रहता है, वह सदा (माया से) निर्लिप रहता है। वह तेरे अंदर भी एक रस बस रहा है, जैसे शीशे (में अक्स बसता हैं उसका सदा स्मरण करना चाहिए)।3।5।

शब्द नंबर २० : राग सोरठि : अंग ६३१

माई मै किहि बिधि लखउ गुसाई ॥
महा मोह अगिआनि तिमरि मो मनु रहिओ उरझाई ॥१॥ रहाउ॥
सगल जनम भरम ही भरम खोइओ नह असथिरु मति पाई ॥
बिखिआसकत रहिओ निस बासुर नह छूटी अधमाई ॥१॥

अर्थ: हे माँ! धरती के प्रभु-पति को मैं किस तरह पहचानूँ? मेरा मन (तो) बड़े मोह भरी अग्यानता में, मोह के अँधेरे में (सदा) फसा रहता है।1। रहाउ। हे माँ! धरती के पति प्रभु को मैं किस तरह पहचानूँ? मेरा मन (तो) बड़े मोह की अज्ञानता में, मोह के अंधेरे में (सदा) फसा रहा (अभी तक ऐसी) मति नहीं हासिल की (जो मुझे) अडोल रख सके। दिन-रात मैं माया में ही लिपटा रहता हूँ। मेरी ये नीचता खत्म होने को नहीं आती।1।

साधसंगु कबहू नही कीना नह कीरति प्रभ गाई ॥
जन नानक मै नाहि कोऊ गुनु राखि लेहु सरनाई ॥२॥६॥

अर्थ: हे माँ! मैंने कभी गुरमुखों की संगति नहीं की, मैंने कभी परमात्मा के महिमा का गीत नहीं गाया। हे दास नानक! (कह: हे प्रभु!) मेरे अंदर कोई गुण नहीं है। मुझे अपनी शरण में रख।2।6।

शब्द नंबर २1 : राग सोरठि : अंग ६३१

माई मनु मेरो बसि नाहि ॥
निस बासुर बिखिअन कउ धावत किहि बिधि रोकउ ताहि ॥१॥ रहाउ॥

अर्थ: हे माँ! मेरा मन मेरे काबू में नहीं। रात-दिन पदार्थों की खातिर दौड़ता फिरता है। मैं इसे कैसे रोकूँ?।1। रहाउ।

बेद पुरान सिम्रिति के मत सुनि निमख न हीए बसावै ॥
पर धन पर दारा सिउ रचिओ बिरथा जनमु सिरावै ॥१॥

अर्थ: ये जीव वेदों-पुराणों-स्मृतियों का उपदेश सुन के (भी) रक्ती भर समय के लिए भी (उस उपदेश को अपने) हृदय में नहीं बसाता। पराए धन, पराई स्त्री के मोह में मस्त रहता है, (इस तरह अपना) जनम व्यर्थ गुजारता है।1।

मदि माइआ कै भइओ बावरो सूझत नह कछु गिआना ॥
घट ही भीतरि बसत निरंजनु ता को मरमु न जाना ॥२॥

अर्थ: जीव माया के नशे में पागल हो रहा है, आत्मिक जीवन के बारे में इसे कोई सूझ नहीं आती। माया से निर्लिप प्रभु इसके दिल में ही बसता है पर ये भेद ये जीव नहीं समझता।2।

जब ही सरनि साध की आइओ दुरमति सगल बिनासी ॥
तब नानक चेतिओ चिंतामनि काटी जम की फासी ॥३॥७॥

अर्थ: जब जीव गुरु की शरण पड़ता है, तब इसकी सारी अनुचित मति नाश हो जाती है। तब, हे नानक! ये सारी मनोकामनाएं पूरी करने वाले परमात्मा को स्मरण करता है, और, इसकी जम की फाँसी (भी) काटी जाती है।3।7।

शब्द नंबर २२ : राग सोरठि : अंग ६३३

रे नर इह साची जीअ धारि ॥
सगल जगतु है जैसे सुपना बिनसत लगत न बार ॥१॥ रहाउ॥

अर्थ: हे मनुष्य! अपने दिल में ये बात पक्की तरह टिका ले, (कि) सारा संसार सपने जैसा है, (इसके) नाश होने में देर नहीं लगती।1। रहाउ।

बारू भीति बनाई रचि पचि रहत नही दिन चारि ॥
तैसे ही इह सुख माइआ के उरझिओ कहा गवार ॥१॥

अर्थ: हे भाई! (जैसे किसी ने) रेत की दीवार खड़ी करके पोच के तैयार की हो, पर वह दीवार चार दिन भी (टिकी) नहीं रहती। इस माया के सुख भी उस (रेत की दीवार) जैसे ही हैं। हे मूर्ख! तू इन सुखों में क्यों मस्त हो रहा है?।1।

अजहू समझि कछु बिगरिओ नाहिनि भजि ले नामु मुरारि ॥
कहु नानक निज मतु साधन कउ भाखिओ तोहि पुकारि ॥२॥८॥

अर्थ: हे भाई! अभी भी समझ जा (अभी) कुछ नहीं बिगड़ा; और परमात्मा का नाम स्मरण किया कर। हे नानक! कहु: (हे भाई!) मैं तुझे गुरमुखों का यह निजी ख्याल पुकार के सुना रहा हूँ।2।8।

शब्द नंबर २३ : राग सोरठि : अंग ६३२

इहु जगि मीतु न देखिओ कोई ॥
सगल जगतु अपनै सुखि लागिओ दुख मै संगि न होई ॥१॥ रहाउ॥

अर्थ: हे भाई! इस जगत में कोई (आखिर तक साथ निभाने वाला) मित्र (मैंने) नहीं देखा। सारा संसार अपने सुख में ही जुटा हुआ है। दुख में (कोई किसी के) साथ (साथी) नहीं बनता।1। रहाउ।

दारा मीत पूत सनबंधी सगरे धन सिउ लागे ॥
जब ही निरधन देखिओ नर कउ संगु छाडि सभ भागे ॥१॥

अर्थ: हे भाई! स्त्री-मित्र-पुत्र-रिश्तेदार- ये सारे धन से (ही) प्यार करते हैं। जब ही इन्होंने मनुष्य को कंगाल देखा, (तभी) साथ छोड़ के भाग जाते हैं।1।

कहंउ कहा यिआ मन बउरे कउ इन सिउ नेहु लगाइओ ॥
दीना नाथ सकल भै भंजन जसु ता को बिसराइओ ॥२॥

अर्थ: हे भाई! मैं इस पागल मन को क्या समझाऊँ? (इसने) इन (कच्चे साथियों) के साथ प्यार डाला हुआ है। (जो परमात्मा) गरीबों का रखवाला और सारे डर नाश करने वाला है उसकी महिमा (इसने) भुलाई हुई है।2।

सुआन पूछ जिउ भइओ न सूधउ बहुतु जतनु मै कीनउ ॥
नानक लाज बिरद की राखहु नामु तुहारउ लीनउ ॥३॥९॥

अर्थ: हे भाई! जैसे कुत्ते की पूँछ सीधी नहीं होती (इसी तरह इस मन की परमात्मा की याद के प्रति लापरवाही हटती नहीं) मैंने बहुत यत्न किया है। हे नानक! (कह: हे प्रभु! अपने) बिरदु भरे प्यार वाले स्वभाव की इज्जत रख (मेरी मदद कर, तो ही) मैं तेरा नाम जप सकता हूँ।3।9।

शब्द नंबर २४ : राग सोरठि : अंग ६३३

मन रे गहिओ न गुर उपदेसु ॥
कहा भइओ जउ मूडु मुडाइओ भगवउ कीनो भेसु ॥१॥ रहाउ॥

अर्थ: हे मन! तू गुरु की शिक्षा ग्रहण नहीं करता। (हे भाई! गुरु का उपदेश भुला के) अगर सिर भी मुनवा लिया, और, भगवे रंग के कपड़े पहन लिए, तो भी क्या बना? (आत्मिक जीवन का कुछ भी ना हो सँवरा)।1। रहाउ।

साच छाडि कै झूठह लागिओ जनमु अकारथु खोइओ ॥
करि परपंच उदर निज पोखिओ पसु की निआई सोइओ ॥१॥

अर्थ: (हे भाई! भगवा भेस तो धार लिया, पर) सदा-स्थिर प्रभु का नाम छोड़ के नाशवान पदार्थों में ही तवज्जो जोड़े रखी, (लोगों से) छल करके अपना पेट पालता रहा, और, पशुओं की तरह सोया रहा।1।

राम भजन की गति नही जानी माइआ हाथि बिकाना ॥
उरझि रहिओ बिखिअन संगि बउरा नामु रतनु बिसराना ॥२॥

अर्थ: हे भाई! (गाफिल मनुष्य) परमात्मा के भजन की जुगति नहीं समझता, माया के हाथ में बिका रहता है। पागल मनुष्य मायावी पदार्थों (के मोह) में मगन रहता है, और, प्रभु के (श्रेष्ठ) रत्न-नाम को भुलाए रखता है।2।

रहिओ अचेतु न चेतिओ गोबिंद बिरथा अउध सिरानी ॥
कहु नानक हरि बिरदु पछानउ भूले सदा परानी ॥३॥१०॥

अर्थ: (मनुष्य माया में फंस के) बेसुध हुआ रहता है, परमात्मा को याद नहीं करता, सारी उम्र व्यर्थ गुजार लेता है। हे नानक! कह: हे हरि! तू अपने बिरद भरे प्यार वाले मूल स्वभाव को याद रख। ये जीव तो सदा भूले ही रहते हैं।3।10।

शब्द नंबर २५ : राग सोरठि : अंग ६३३

जो नरु दुख मै दुखु नही मानै ॥
सुख सनेहु अरु भै नही जा कै कंचन माटी मानै ॥१॥ रहाउ॥

अर्थ: हे भाई! जो मनुष्य दुखों में घबराता नहीं, जिस मनुष्य के हृदय में सुखों से मोह नहीं, और (किसी किस्म का) डर नहीं, जो मनुष्य सोने को मिट्टी (के समान) समझता है (उसके अंदर परमात्मा का निवास हो जाता है)।1। रहाउ।

नह निंदिआ नह उसतति जा कै लोभु मोहु अभिमाना ॥
हरख सोग ते रहै निआरउ नाहि मान अपमाना ॥१॥

अर्थ: हे भाई! जिस मनुष्य के अंदर किसी की चुगली-बुराई नहीं, किसी की खुशामद नहीं, जिसके अंदर ना लोभ है, ना मोह है, ना अहंकार है; जो मनुष्य खुशी और ग़मी से निर्लिप रहता है, जिस पर ना आदर असर कर सकता है ना निरादरी (ऐसे मनुष्य के दिल में परमात्मा का निवास हो जाता है)।1।

आसा मनसा सगल तिआगै जग ते रहै निरासा ॥
कामु क्रोधु जिह परसै नाहनि तिह घटि ब्रहमु निवासा ॥२॥

अर्थ: हे भाई! जो मनुष्य आशाएं-उम्मीदें सब त्याग देता है, जगत से निर्मोह रहता है, जिस मनुष्य को ना काम-वासना छू सकती है ना ही क्रोध छू सकता है, उस मनुष्य के दिल में परमात्मा का निवास हो जाता है।2।

गुर किरपा जिह नर कउ कीनी तिह इह जुगति पछानी ॥
नानक लीन भइओ गोबिंद सिउ जिउ पानी संगि पानी ॥३॥११॥

अर्थ: (पर) हे नानक! (कहः) जिस मनुष्य पर गुरु ने मेहर की उसने (ही जीवन की) ये विधि समझी है। वह मनुष्य परमात्मा के साथ ऐसे एक-मेक हो जाता है, जैसे पानी के साथ पानी मिल जाता है।3।11।

शब्द नंबर २६ : राग सोरठि : अंग ६३४

प्रीतम जानि लेहु मन माही ॥
अपने सुख सिउ ही जगु फांधिओ को काहू को नाही ॥१॥ रहाउ॥

अर्थ: हे मित्र! (अपने) मन में (ये बात) पक्के तोर पर समझ लें कि सारा संसार अपने सुख के साथ ही बँधा हुआ है। कोई भी किसी का (आखिर तक निभाने वाला साथी) नहीं (बनता)।1। रहाउ।

सुख मै आनि बहुतु मिलि बैठत रहत चहू दिसि घेरै ॥
बिपति परी सभ ही संगु छाडित कोऊ न आवत नेरै ॥१॥

अर्थ: हे मित्र! (जब मनुष्य) सुख में (होता है, तब) कई यार दोस्त मिल के (उसके पास) बैठते हैं, और, (उसे) चारों और से घेरे रखते हैं। (पर जब उसे कोई) मुसीबत आती है, सारे ही साथ छोड़ जाते हैं, (फिर) कोई भी (उसके) नजदीक नहीं फटकता।1।

घर की नारि बहुतु हितु जा सिउ सदा रहत संग लागी ॥
जब ही हंस तजी इह कांइआ प्रेत प्रेत करि भागी ॥२॥

अर्थ: हे मित्र! घर की स्त्री (भी) जिससे बड़ा प्यार होता है, जो सदा (पति के) साथ लगी रहती है, जिस वक्त (पति की) जीवात्मा इस शरीर को छोड़ देती है, (स्त्री उससे ये कह के) परे हट जाती है कि ये मर चुका है मर चुका है।2।

इह बिधि को बिउहारु बनिओ है जा सिउ नेहु लगाइओ ॥
अंत बार नानक बिनु हरि जी कोऊ कामि न आइओ ॥३॥१२॥१३९॥

अर्थ: हे नानक! (कह: हे मित्र! दुनिया का) इस तरह का व्यवहार बना हुआ है जिससे (मनुष्य ने) प्यार डाला हुआ है। (पर, हे मित्र! आखिरी समय में परमात्मा के बिना और कोई भी (मनुष्य की) मदद नहीं कर सकता।3।12।139।

अंग ६८४

੧ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

अकाल पुरख एक है , जो सतगुर की क्रपा से मिलता हैं ॥

धनासरी महला ९ ॥

शब्द नंबर २७ : राग धनासरी : अंग ६८४

काहे रे बन खोजन जाई ॥
सरब निवासी सदा अलेपा तोही संगि समाई ॥१॥ रहाउ॥

अर्थ: हे भाई! (परमात्मा को) ढूँढने के लिए जंगलों में क्यों जाता है? परमात्मा सबमें बसने वाला है, (फिर भी) सदा (माया के प्रभाव से) निर्लिप रहता है। वह परमात्मा तेरे साथ बसता है।1। रहाउ।

पुहप मधि जिउ बासु बसतु है मुकर माहि जैसे छाई ॥
तैसे ही हरि बसे निरंतरि घट ही खोजहु भाई ॥१॥

अर्थ: हे भाई! जैसे फूल में सुगंधि बसती है, जैसे शीशे में (शीशा देखने वाले का) अक्स बसता है, वैसे ही परमात्मा एक-रस सबके अंदर बसता है। (इस वास्ते उसको) अपने हृदय में ही तलाश।1।

बाहरि भीतरि एको जानहु इहु गुर गिआनु बताई ॥
जन नानक बिनु आपा चीनै मिटै न भ्रम की काई ॥२॥१॥

अर्थ: हे भाई! गुरु का (आत्मिक जीवन का) उपदेश ये बताता है कि (अपने शरीर के) अंदर (और अपने शरीर से) बाहर (हर जगह) एक परमात्मा को (बसता) समझो। हे दास नानक! अपना आत्मिक जीवन परखे बिना (मन पर पड़ा हुआ) भटकना का जाला दूर नहीं हो सकता (और, तब तक सर्व-व्यापक परमात्मा की सूझ नहीं आ सकती)।2।1।

शब्द नंबर २८ : राग धनासरी : अंग ६८४

साधो इहु जगु भरम भुलाना ॥
राम नाम का सिमरनु छोडिआ माइआ हाथि बिकाना ॥१॥ रहाउ॥

अर्थ: हे संत जनो! ये जगत (माया की) भटकना में (पड़ कर) गलत रास्ते पर पड़ा रहता है। प्रभु के नाम का स्मरण छोड़े रहता है, और, माया के हाथ में बिका रहता है (माया के बदले आत्मिक जीवन गवा देता है)।1। रहाउ।

मात पिता भाई सुत बनिता ता कै रसि लपटाना ॥
जोबनु धनु प्रभता कै मद मै अहिनिसि रहै दिवाना ॥१॥

अर्थ: हे संत जनो! माता, पिता, भाई, पुत्र, स्त्री- (भूला हुआ जगत) इनके मोह में फसा रहता है। जवानी, धन, ताकत के नशे में जगत दिन-रात पागल हुआ रहता है।1।

दीन दइआल सदा दुख भंजन ता सिउ मनु न लगाना ॥
जन नानक कोटन मै किनहू गुरमुखि होइ पछाना ॥२॥२॥

अर्थ: जो परमात्मा दीनों पर दया करने वाला है, जो सारे दुखों का नाश करने वाला है, जगत उससे अपना मन नहीं जोड़ता। हे दास नानक! (कह:) करोड़ों में से किसी विरले (दुर्लभ) मनुष्य ने गुरु की शरण पड़ कर परमात्मा के साथ सांझ डाली है।2।2।

शब्द नंबर २९ : राग धनासरी : अंग ६८५

तिह जोगी कउ जुगति न जानउ ॥
लोभ मोह माइआ ममता फुनि जिह घटि माहि पछानउ ॥१॥ रहाउ॥

अर्थ: हे भाई! जिस (जोगी) के हृदय में लोभ माया के मोह और ममता (की लहरें उठ रही) देखता हूँ, मैं समझता हूँ कि उस जोगी को (सही) जीवन-विधि (अभी) नहीं आई।1। रहाउ।

पर निंदा उसतति नह जा कै कंचन लोह समानो ॥
हरख सोग ते रहै अतीता जोगी ताहि बखानो ॥१॥

अर्थ: हे भाई! जिस मनुष्य के हृदय में पराई निंदा नहीं है, पराई खुशामद नहीं है, जिसको सोना लोहा एक जैसे ही दिखते हैं, जो मनुष्य खुशी गमी से निर्लिप रहता है; उसको ही जोगी कह।1।

चंचल मनु दह दिसि कउ धावत अचल जाहि ठहरानो ॥
कहु नानक इह बिधि को जो नरु मुकति ताहि तुम मानो ॥२॥३॥

अर्थ: हे नानक! कह: (हे भाई!) ये सदा भटकता रहने वाला मन दसों दिशाओं में दौड़ता फिरता है। जिस मनुष्य ने इसे अडोल करके टिका लिया है, जो मनुष्य इस किस्म का है, समझ लें उसे विकारों से खलासी मिल गई है।2।3।

शब्द नंबर ३० : राग धनासरी : अंग ६८५

अब मै कउनु उपाउ करउ ॥
जिह बिधि मन को संसा चूकै भउ निधि पारि परउ ॥१॥ रहाउ॥

अर्थ: हे भाई! अब मैं कौन सा प्रयत्न करूँ (जिससे मेरे) मन का सहम खत्म हो जाए, और, मैं संसार-समुंदर से पार लांघ जाऊँ।1। रहाउ।

जनमु पाइ कछु भलो न कीनो ता ते अधिक डरउ ॥
मन बच क्रम हरि गुन नही गाए यह जीअ सोच धरउ ॥१॥

अर्थ: हे भाई! मानव जन्म प्राप्त करके मैंने कोई भलाई नहीं की, इसलिए मैं बहुत डरता रहता हूँ। मैं (अपने) अंदर (हर वक्त) यही चिन्ता करता रहता हूँ कि मैंने अपने मन से अपने वचन से, कर्म से (कभी भी) परमात्मा के गुण नहीं गाए।1।

गुरमति सुनि कछु गिआनु न उपजिओ पसु जिउ उदरु भरउ ॥
कहु नानक प्रभ बिरदु पछानउ तब हउ पतित तरउ ॥२॥४॥९॥९॥१३॥५८॥४॥९३॥

अर्थ: हे भाई! गुरु की मति सुन के मेरे अंदर आत्मिक जीवन की कुछ भी सूझ पैदा नहीं हुई, मैं पशू की तरह (रोज) अपना पेट भर लेता हूँ। हे नानक! कहु: हे प्रभु! मैं विकारी तब ही (संसार-समुंदर से) पार लांघ सकता हूँ अगर तू अपना मूल कदीमों वाला प्यार वाला स्वभाव याद रखे।2।4।9।9।13।58।4।93।

अंग ७०२

ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

अकाल पुरख एक है , जो सतगुर की क्रपा से मिलता हैं ॥

जैतसरी महला ९ ।।

शब्द नंबर ३१ : राग जैतसरी : अंग ७०२

भूलिओ मनु माइआ उरझाइओ ॥
जो जो करम कीओ लालच लगि तिह तिह आपु बंधाइओ ॥१॥ रहाउ॥

अर्थ: हे भाई! (सही जीवन-राह) भूला हुआ मन माया (के मोह में) फंसा रहता है। (फिर, ये) लालच में फंस के जो-जो काम करता है, उनसे अपने आप को (माया के मोह में और) फसा लेता है।1। रहाउ।

समझ न परी बिखै रस रचिओ जसु हरि को बिसराइओ ॥
संगि सुआमी सो जानिओ नाहिन बनु खोजन कउ धाइओ ॥१॥

अर्थ: (हे भाई! सही जीवन से राह से टूटे हुए मनुष्य को) आत्मिक जीवन की समझ नहीं होती। विषियों के स्वाद में मस्त रहता है, परमात्मा की महिमा भुलाए रहता है। परमात्मा (तो इसके) अंग-संग (बसता है) उसके साथ गहरी सांझ नहीं डालता, जंगल में ढूँढने के लिए दौड़ पड़ता है।1।

रतनु रामु घट ही के भीतरि ता को गिआनु न पाइओ ॥
जन नानक भगवंत भजन बिनु बिरथा जनमु गवाइओ ॥२॥१॥

अर्थ: हे भाई! रत्न (जैसा कीमती) हरि-नाम हृदय के अंदर ही बसता है (पर भूला हुआ मनुष्य) उससे सांझ नहीं बनाता। हे दास नानक! (कहः) परमात्मा के भजन के बिना मनुष्य अपना जीवन व्यर्थ गवा लेता है।2।1।

शब्द नंबर ३२ : राग जैतसरी : अंग ७०३

हरि जू राखि लेहु पति मेरी ॥
जम को त्रास भइओ उर अंतरि सरनि गही किरपा निधि तेरी ॥१॥ रहाउ॥

अर्थ: हे प्रभु जी! मेरी इज्जत रख लो। मेरे हृदय में मौत का डर बस रहा है (इससे बचने के लिए) हे कृपा के खजाने प्रभु! मैंने तेरा आसरा लिया है।1। रहाउ।

महा पतित मुगध लोभी फुनि करत पाप अब हारा ॥
भै मरबे को बिसरत नाहिन तिह चिंता तनु जारा ॥१॥

अर्थ: हे प्रभु! मैं बड़ा विकारी हूँ, मूर्ख हूँ लालची भी हूँ, पाप करते-करते अब मैं थक गया हूँ। मुझे मरने का डर (किसी भी वक्त) भूलता नहीं, इस (मरने) की चिन्ता ने मेरा शरीर जला दिया है।1।

कीए उपाव मुकति के कारनि दह दिसि कउ उठि धाइआ ॥
घट ही भीतरि बसै निरंजनु ता को मरमु न पाइआ ॥२॥

अर्थ: हे भाई! (मौत के इस सहम से) खलासी हासिल करने के लिए मैंने अनेक प्रयास किए हैं, दसों दिशाओं में उठ-उठ के दौड़ा हूँ। (माया के मोह से) निर्लिप परमात्मा हृदय में ही बसता है, उसका भेद नहीं समझा।2।

नाहिन गुनु नाहिन कछु जपु तपु कउनु करमु अब कीजै ॥
नानक हारि परिओ सरनागति अभै दानु प्रभ दीजै ॥३॥२॥

अर्थ: हे नानक! (कह: परमात्मा की शरण पड़े बिना) कोई गुण नहीं कोई जप-तप नहीं (जो मौत के सहम से बचा ले, फिर) अब कौन सा काम किया जाए? हे प्रभु! (और तरीकों से) हार के मैं तेरी शरण आ पड़ा हूँ। तू मुझे मौत के डर से खलासी का दान दे।3।

शब्द नंबर ३३ : राग जैतसरी : अंग ७०३

मन रे साचा गहो बिचारा ॥
राम नाम बिनु मिथिआ मानो सगरो इहु संसारा ॥१॥ रहाउ॥

अर्थ: हे मेरे मन! ये अटल विचार (अपने अंदर) संभाल के रख- परमात्मा के अलावा बाकी इस सारे संसार को नाशवान समझ।1। रहाउ।

जा कउ जोगी खोजत हारे पाइओ नाहि तिह पारा ॥
सो सुआमी तुम निकटि पछानो रूप रेख ते निआरा ॥१॥

अर्थ: हे मेरे मन! जोगी लोग जिस परमात्मा को ढूँढते-ढूँढते थक गए, और उसके स्वरूप का अंत नहीं पा सके, उस मालिक को तू अपने अंग-संग बसता जान, पर उसका कोई रूप उसका कोई चिन्ह बताया नहीं जा सकता।1।

पावन नामु जगत मै हरि को कबहू नाहि स्मभारा ॥
नानक सरनि परिओ जग बंदन राखहु बिरदु तुहारा ॥२॥३॥

अर्थ: हे मेरे मन! जगत में परमात्मा का नाम (ही) पवित्र करने वाला है, तूने उस नाम को (अपने अंदर) कभी संभाल के नहीं रखा। हे नानक! (कह:) हे सारे जगत के वंदनीय प्रभु! मैं तेरी शरण में आया हूँ, मेरी रक्षा कर। ये तेरा मूल कुदरती स्वभाव (बिरद) है (कि तू शरण आए की रक्षा करता है)।2।3।

अंग ७१८

१ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

अकाल पुरख एक है , जो सतगुर की क्रपा से मिलता हैं ॥

टोडी महला ९ ।।

शब्द नंबर ३४ : राग टोडी : अंग ७१८

कहउ कहा अपनी अधमाई ॥
उरझिओ कनक कामनी के रस नह कीरति प्रभ गाई ॥१॥ रहाउ॥

अर्थ: हे भाई! मैं अपनी नीचता कितनी बयान करूँ? मैंने (कभी) परमात्मा की महिमा नहीं की। (मेरा मन) धन-पदार्थ और स्त्री के रसों में फसा रहता है।1।

जग झूठे कउ साचु जानि कै ता सिउ रुच उपजाई ॥
दीन बंध सिमरिओ नही कबहू होत जु संगि सहाई ॥१॥

अर्थ: हे भाई! इस नाशवान संसार को सदा कायम रहने वाला समझ के मैंने इस संसार से ही प्रीति बनाई हुई है। मैंने उस परमात्मा का नाम कभी नहीं स्मरण किया जो दीन-बँधु है और जो (सदा हमारे) साथ मददगार है।1।

मगन रहिओ माइआ मै निस दिनि छुटी न मन की काई ॥
कहि नानक अब नाहि अनत गति बिनु हरि की सरनाई ॥२॥१॥३१॥

अर्थ: हे भाई! मैं रात-दिन माया (के मोह) में मस्त रहा हूँ, (इस तरह मेरे) मन की मैल दूर नहीं हो सकी। हे नानक! कह: अब (जब मैं गुरु की शरण पड़ा हूँ, तब मुझे समझ आई है कि) प्रभु की शरण पड़े बिना किसी भी और जगह उच्च आत्मिक अवस्था प्राप्त नहीं हो सकती।2।1।31।

अंग ७२६

ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

अकाल पुरख एक है , जो सतगुर की क्रपा से मिलता हैं ॥

तिलंग महला ९ ।।

शब्द नंबर ३५ : राग तिलंग : अंग ७२६

चेतना है तउ चेत लै निसि दिनि मै प्रानी ॥
छिनु छिनु अउध बिहातु है फूटै घट जिउ पानी ॥१॥ रहाउ॥

अर्थ: हे मनुष्य! अगर तूने परमात्मा का नाम स्मरणा है, तो दिन-रात एक करके स्मरणा शुरू कर दे, (क्योंकि) जैसे चटके हुए घड़े में से पानी (धीरे-धीरे निकलता रहता है, वैसे ही) एक-एक छिन करके उम्र बीतती जा रही है।1। रहाउ।

हरि गुन काहि न गावही मूरख अगिआना ॥
झूठै लालचि लागि कै नहि मरनु पछाना ॥१॥

अर्थ: ओह, बेवकूफ! ओह, समझ से बाहर! तुम परमेश्वर की स्तुति के गीत क्यों नहीं गाते हो? झूठे प्रलोभन का लालच में फंस कर मौत तुझे याद नहीं है।1।

अजहू कछु बिगरिओ नही जो प्रभ गुन गावै ॥
कहु नानक तिह भजन ते निरभै पदु पावै ॥२॥१॥

अर्थ: हे मूर्ख! हे बेसमझ! तू परमात्मा की महिमा के गीत गाने आरम्भ कर दे (भले ही स्मरण के बग़ैर कितनी ही उम्र बीत चुकी हो) फिर भी कोई नुकसान नहीं होता, (क्योंकि) उस परमात्मा के भजन की इनायत से मनुष्य वह आत्मिक दर्जा प्राप्त कर लेता है, जहाँ कोई डर छू नहीं सकता।2।1।

शब्द नंबर ३६ : राग तिलंग : अंग ७२६

जाग लेहु रे मना जाग लेहु कहा गाफल सोइआ ॥
जो तनु उपजिआ संग ही सो भी संगि न होइआ ॥१॥ रहाउ॥

अर्थ: हे मन! होश कर, होश कर! तू क्यों (माया के मोह में) बेपरवाह हो के सो रहा है? (देख) जो (ये) शरीर (मनुष्य के साथ) ही पैदा होता है; ये भी (आखिर) साथ नहीं जाता।1। रहाउ।

जाग लेहु रे मना जाग लेहु कहा गाफल सोइआ ॥
जो तनु उपजिआ संग ही सो भी संगि न होइआ ॥१॥ रहाउ॥

अर्थ: हे मन! होश कर, होश कर! तू क्यों (माया के मोह में) बेपरवाह हो के सो रहा है? (देख) जो (ये) शरीर (मनुष्य के साथ) ही पैदा होता है; ये भी (आखिर) साथ नहीं जाता।1। रहाउ।

जीवत लउ बिउहारु है जग कउ तुम जानउ ॥
नानक हरि गुन गाइ लै सभ सुफन समानउ ॥२॥२॥

अर्थ: हे नानक! (कह: हे मन!) जगत को तू ऐसा ही समझ (कि यहाँ) जिंदगी तक ही बर्ताव-व्यवहार रहता है। वैसे भी, ये सारा सपने की तरह ही है। (इस वास्ते जब तक जीता है) परमात्मा के गुण गाता रह।2।2।

शब्द नंबर ३७ : राग तिलंग : अंग ७२७

हरि जसु रे मना गाइ लै जो संगी है तेरो ॥
अउसरु बीतिओ जातु है कहिओ मान लै मेरो ॥१॥ रहाउ॥

अर्थ: हे मन! परमात्मा के महिमा के गीत गाया कर, ये महिमा ही तेरा असल साथी है। मेरे वचन मान ले। उम्र का समय बीतता जा रहा है।1। रहाउ।

स्मपति रथ धन राज सिउ अति नेहु लगाइओ ॥
काल फास जब गलि परी सभ भइओ पराइओ ॥१॥

अर्थ: हे मन! मनुष्य धन-पदार्थ, रथ, माल, राज माल से बड़ा मोह करता है। पर जब मौत की फाँसी (उसके) गले में पड़ती है, हरेक चीज बेगानी हो जाती है।1।

जानि बूझ कै बावरे तै काजु बिगारिओ ॥
पाप करत सुकचिओ नही नह गरबु निवारिओ ॥२॥

अर्थ: हे झल्ले मनुष्य! ये सब कुछ जानते हुए समझते हुए भी तू अपना काम बिगाड़ रहा है। तू पाप करते हुए (कभी) संकोचित नहीं होता, तू (इस धन-पदार्थ का) अहंकार भी दूर नहीं करता।2।

जिह बिधि गुर उपदेसिआ सो सुनु रे भाई ॥
नानक कहत पुकारि कै गहु प्रभ सरनाई ॥३॥३॥

अर्थ: नानक (तुझे) पुकार के कहता है: हे भाई! गुरु ने (मुझे) जिस तरह उपदेश किया है, वह (तू भी) सुन ले (कि) प्रभु की शरण पड़ा रह (सदा प्रभु का नाम जपा कर)।3।3।

अंग ८३०

१ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

अकाल पुरख एक है , जो सतगुर की क्रपा से मिलता हैं ॥

राग बिलावलु महला ९ ।।

शब्द नंबर ३८ : राग बिलावलु : अंग ८३०

दुख हरता हरि नामु पछानो ॥
अजामलु गनिका जिह सिमरत मुकत भए जीअ जानो ॥१॥ रहाउ॥

अर्थ: हे भाई! परमात्मा के नाम के साथ सांझ डाले रख, ये नाम सारे दुखों का नाश करने वाला है। इस नाम को स्मरण करते-स्मरण करते अजामल विकारों से हट गया, गनिका विकारों से मुक्त हो गई। तू भी अपने दिल में उस हरि-नाम के साथ जान-पहचान बनाए रख।1। रहाउ।

गज की त्रास मिटी छिनहू महि जब ही रामु बखानो ॥
नारद कहत सुनत ध्रूअ बारिक भजन माहि लपटानो ॥१॥

अर्थ: हे भाई! जब गज ने परमात्मा का नाम उचारा, उसकी बिपदा भी एक पल में दूर हो गई। नारद का दिया हुआ उपदेश सुनते ही बालक ध्रुव परमात्मा के भजन में मस्त हो गया।1।

अचल अमर निरभै पदु पाइओ जगत जाहि हैरानो ॥
नानक कहत भगत रछक हरि निकटि ताहि तुम मानो ॥२॥१॥

अर्थ: (हरि-नाम के भजन की इनायत से ध्रुव ने) ऐसा आत्मिक दर्जा प्राप्त कर लिया जो सदा के लिए अटल और अमर हो गया। उसको देख के दुनिया हैरान हो रही है। नानक कहता है: हे भाई! तू भी उस परमात्मा को सदा अपने अंग-संग बसता समझ, वह परमात्मा अपने भक्तों की रक्षा करने वाला है।2।1।

शब्द नंबर ३९ : राग बिलावलु : अंग ८३०

हरि के नाम बिना दुखु पावै ॥
भगति बिना सहसा नह चूकै गुरु इहु भेदु बतावै ॥१॥ रहाउ॥

अर्थ: हे भाई! गुरु (जीवन-मार्ग की) यह गहरी बात बताता है, कि परमात्मा की भक्ति किए बिना मनुष्य का सहम खत्म नहीं होता, परमात्मा का नाम (स्मरण) के बिना दुख सहता रहता है।1। रहाउ।

कहा भइओ तीरथ ब्रत कीए राम सरनि नही आवै ॥
जोग जग निहफल तिह मानउ जो प्रभ जसु बिसरावै ॥१॥

अर्थ: हे भाई! अगर मनुष्य परमात्मा की शरण नहीं पड़ता, तो उसका तीर्थ-यात्रा करने का कोई लाभ नहीं, व्रत रखने का कोई फायदा नहीं। जो मनुष्य परमात्मा की महिमा भुला देता है मैं समझता हूँ कि उसके योग-साधना और यज्ञ (आदि कर्मकांड सब) व्यर्थ हैं।1।

मान मोह दोनो कउ परहरि गोबिंद के गुन गावै ॥
कहु नानक इह बिधि को प्रानी जीवन मुकति कहावै ॥२॥२॥

अर्थ: हे नानक! कह: जो मनुष्य अहंकार और माया का मोह छोड़ के परमात्मा की महिमा के गीत गाता रहता है, जो मनुष्य इस किस्म का जीवन व्यतीत करने वाला है, वह जीवन-मुक्त कहलवाता है (वह मनुष्य उस श्रेणी में से गिना जाता है, जो इस जिंदगी में विकारों की पकड़ से बचे रहते हैं)।2।

शब्द नंबर ४० : राग बिलावलु : अंग ८३१

जा मै भजनु राम को नाही ॥
तिह नर जनमु अकारथु खोइआ यह राखहु मन माही ॥१॥ रहाउ॥

अर्थ: हे भाई! ये बात अच्छी तरह याद रखो कि जिस मनुष्य के अंदर परमात्मा के नाम का भजन नहीं है उस मनुष्य ने अपनी जिंदगी व्यर्थ ही गवा ली है।1। रहाउ।

तीरथ करै ब्रत फुनि राखै नह मनूआ बसि जा को ॥
निहफल धरमु ताहि तुम मानहु साचु कहत मै या कउ ॥१॥

अर्थ: हे भाई! जिस मनुष्य का मन अपने बस में नहीं है, वह चाहे तीर्थों पर स्नान करता है, व्रत भी रखता है, पर तुम (ये तीर्थ व्रत आदि वाला) उसका धर्म व्यर्थ समझो। मैं ऐसे मनुष्य को भी यह सच्ची बात कह देता हूँ।1।

जैसे पाहनु जल महि राखिओ भेदै नाहि तिह पानी ॥
तैसे ही तुम ताहि पछानहु भगति हीन जो प्रानी ॥२॥

अर्थ: हे भाई! जैसे पत्थर पानी में रखा हुआ हो, उसको पानी भेद नहीं सकता। (पानी उस पर असर नहीं कर सकता), ऐसा ही तुम उस मनुष्य को समझ लो जो प्रभु-भक्ती से वंचित है।2।

कल मै मुकति नाम ते पावत गुरु यह भेदु बतावै ॥
कहु नानक सोई नरु गरूआ जो प्रभ के गुन गावै ॥३॥३॥

अर्थ: हे भाई! गुरु जिंदगी का यह राज बताता है कि मानव जीवन में इन्सान परमात्मा के नाम के द्वारा ही विकारों से खलासी प्राप्त कर सकता है। हे नानक! कहः वही मनुष्य आदरणीय हैं जो परमात्मा के गुण गाते रहते हैं।3।3।

अंग ९०१

१ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

अकाल पुरख एक है , जो सतगुर की क्रपा से मिलता हैं ॥

रागु रामकली महला ९ ।।

शब्द नंबर ४१ : राग रामकली : अंग ९०१

रे मन ओट लेहु हरि नामा ॥
जा कै सिमरनि दुरमति नासै पावहि पदु निरबाना ॥१॥ रहाउ॥

अर्थ: हे (मेरे) मन! परमात्मा के नाम का आसरा लिया कर, जिस नाम के स्मरण करने से खोटी मति नाश हो जाती है, (नाम की इनायत से) तू वह आत्मिक दर्जा हासिल कर लेगा जहाँ कोई वासना अपना प्रभाव नहीं डाल सकती।1। रहाउ।

बडभागी तिह जन कउ जानहु जो हरि के गुन गावै ॥
जनम जनम के पाप खोइ कै फुनि बैकुंठि सिधावै ॥१॥

अर्थ: हे (मेरे) मन! जो मनुष्य परमात्मा के गुण गाता है उसको बड़े भाग्यों वाला समझ। वह मनुष्य अनेक जन्मों के पाप दूर करके फिर बैकुंठ में जा पहुँचता है।

अजामल कउ अंत काल महि नाराइन सुधि आई ॥
जां गति कउ जोगीसुर बाछत सो गति छिन महि पाई ॥२॥

अर्थ: (हे मेरे मन! देख, पुरानी प्रसिद्ध कथा है कि) आखिरी समय में (पापी) अजामल को परमात्मा के नाम की सूझ आ गई, उसने वह ऊँची आत्मिक अवस्था एक पल में हासिल कर ली, जिस आत्मिक अवस्था को बड़े-बड़े जोगी तरसते रहते हैं।2।

नाहिन गुनु नाहिन कछु बिदिआ धरमु कउनु गजि कीना ॥
नानक बिरदु राम का देखहु अभै दानु तिह दीना ॥३॥१॥

अर्थ: हे नानक! (कह: हे मेरे मन! गज की कथा भी सुन। गज में) ना कोई गुण था, ना ही उसको कोई विद्या प्राप्त हुई थी। (उस विचारे) हाथी ने कौन सा धार्मिक कर्म करना था? पर देख परमात्मा का बिरद भरा स्वभाव, परमात्मा ने उस गज को निर्भयता की पदवी बख्श दी।3।1।

शब्द नंबर ४२ : राग रामकली : अंग ९०२

साधो कउन जुगति अब कीजै ॥
जा ते दुरमति सगल बिनासै राम भगति मनु भीजै ॥१॥ रहाउ॥

अर्थ: हे संत जनो! अब (इस मनुष्य जनम में वह) कौन सी तरतीब अपनाई जाए, जिसके करने से (मनुष्य के अंदर की) सारी दुर्मति नाश हो जाए, और (मनुष्य का) मन परमात्मा की भक्ति में रच-मिच जाए?।1। रहाउ।

मनु माइआ महि उरझि रहिओ है बूझै नह कछु गिआना ॥
कउनु नामु जगु जा कै सिमरै पावै पदु निरबाना ॥१॥

अर्थ: हे संत-जनो! (आम तौर पर मनुष्य का) मन माया (के मोह) में उलझा रहता है, मनुष्य रक्ती भर भी समझदारी की ये बात नहीं विचारता कि वह कौन सा नाम है जिसका स्मरण करने से जगत वासना-रहित आत्मिक अवस्था हासिल कर लेता है।1।

भए दइआल क्रिपाल संत जन तब इह बात बताई ॥
सरब धरम मानो तिह कीए जिह प्रभ कीरति गाई ॥२॥

अर्थ: हे भाई! जब संत जन (किसी भाग्यशाली पर) दयावान होते हैं, कृपा करते हैं, तब वह (उस मनुष्य को) ये बात बताते हैं कि- जिस मनुष्य ने परमात्मा की महिमा का गीत गाना आरम्भ कर दिया, ऐसे समझ लें कि उसने सारे ही धार्मिक कर्म कर डाले।2।

राम नामु नरु निसि बासुर महि निमख एक उरि धारै ॥
जम को त्रासु मिटै नानक तिह अपुनो जनमु सवारै ॥३॥२॥

अर्थ: हे नानक! (कह: हे भाई! जो) मनुष्य दिन-रात में एक निमेष मात्र समय के लिए भी परमात्मा का नाम (अपने) हृदय में बसाता है, वह मनुष्य अपना (मानव) जन्म सफल कर लेता है, उस मनुष्य के दिल में से मौत का सहम दूर हो जाता है।3।2।

शब्द नंबर ४३ : राग रामकली : अंग ९०२

प्रानी नाराइन सुधि लेहि ॥
छिनु छिनु अउध घटै निसि बासुर ब्रिथा जातु है देह ॥१॥ रहाउ॥

अर्थ: हे भाई! परमात्मा की याद हृदय में बसाए रख। (प्रभु की याद के बिना तेरा मनुष्य) शरीर व्यर्थ जा रहा है। दिन-रात एक-एक छिन करके तेरी उम्र घटती जा रही है।1। रहाउ।

तरनापो बिखिअन सिउ खोइओ बालपनु अगिआना ॥
बिरधि भइओ अजहू नही समझै कउन कुमति उरझाना ॥१॥

अर्थ: (जीव का भी अजब दुर्भाग्य है कि इसने) जवानी (की उम्र) विषौ-विकारों में गवा ली, बाल-उम्र अंजान-पने में (गवा ली। अब) वृद्ध हो गया है, पर अभी भी नहीं समझता। (पता नहीं यह) किस कुमति में फसा पड़ा है।1।

मानस जनमु दीओ जिह ठाकुरि सो तै किउ बिसराइओ ॥
मुकतु होत नर जा कै सिमरै निमख न ता कउ गाइओ ॥२॥

अर्थ: हे प्राणी! जिस ठाकुर प्रभु ने (तुझे) मानव जनम दिया हुआ है, तू उसको क्यों भुला रहा है? हे नर! जिस परमात्मा का नाम स्मरण करने से माया के बंधनो से निजात मिलती है तू एक निमख मात्र भी उस (की महिमा) को नहीं गाता।2।

माइआ को मदु कहा करतु है संगि न काहू जाई ॥
नानकु कहतु चेति चिंतामनि होइ है अंति सहाई ॥३॥३॥८१॥

अर्थ: हे प्राणी! तू क्यों माया का इतना गुमान कर रहा है? (ये तो) किसी के साथ भी (आखिर में) नहीं जाती। नानक कहता है: हे भाई! परमात्मा का स्मरण करता रह आखिर में वह तेरा मददगार होगा।3।3।81।

अंग १००८

੧ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

अकाल पुरख एक है , जो सतगुर की क्रपा से मिलता हैं ॥

राग मारू महला ९ ॥

शब्द नंबर ४४ : राग मारू : अंग १००८

हरि को नामु सदा सुखदाई ॥
जा कउ सिमरि अजामलु उधरिओ गनिका हू गति पाई ॥१॥ रहाउ॥

अर्थ: हे भाई! परमात्मा का नाम सदा आत्मिक आनंद देने वाला है, जिस नाम को स्मरण करके अजामल विकारों से बच गया था, (इस नाम को स्मरण करके) वेश्वा ने भी उच्च आत्मिक अवस्था हासिल कर ली थी।1। रहाउ।

पंचाली कउ राज सभा महि राम नाम सुधि आई ॥
ता को दूखु हरिओ करुणा मै अपनी पैज बढाई ॥१॥

अर्थ: हे भाई! दुर्योधन के राज-दरबार में द्रोपदी ने (भी) परमात्मा के नाम का ध्यान धरा था, और, तरस-स्वरूप परमात्मा ने उसका दुख दूर किया था, (और इस तरह) अपना रसूख बढ़ाया था।1।

जिह नर जसु किरपा निधि गाइओ ता कउ भइओ सहाई ॥
कहु नानक मै इही भरोसै गही आनि सरनाई ॥२॥१॥

अर्थ: हे भाई! जिस भी लोगों ने कृपा के खजाने परमात्मा की महिमा की, परमात्मा उनका मददगार (हो के) पहुँचा। हे नानक! कह: मैंने भी इसी ही भरोसे में आ कर परमात्मा की शरण ली है।2।1।

शब्द नंबर ४५ : राग मारू : अंग १००८

अब मै कहा करउ री माई ॥
सगल जनमु बिखिअन सिउ खोइआ सिमरिओ नाहि कन्हाई ॥१॥ रहाउ॥

अर्थ: हे माँ! समय बीत जाने पर मैं क्या कर सकता हूँ? (भाव, वक्त बीत जाने पर मनुष्य कुछ भी नहीं कर सकता)। जिस मनुष्य ने सारी जिंदगी विषय-विकारों में गवा ली, और, परमात्मा का स्मरण कभी भी ना किया (वह समय बीत जाने पर फिर कुछ नहीं हो सकता)।1। रहाउ।

काल फास जब गर महि मेली तिह सुधि सभ बिसराई ॥
राम नाम बिनु या संकट महि को अब होत सहाई ॥१॥

अर्थ: हे माँ! जब जमराज (मनुष्य के) गले में मौत का फंदा डाल देता है, तब वह उसकी सारी सुध-बुध भुला देता है। उस बिपता में परमात्मा के नाम के बिना और कोई भी मददगार नहीं बन सकता (जमों के फंदों से, आत्मिक मौत से सहम से सिर्फ हरि-नाम ही बचाता है)।1।

जो स्मपति अपनी करि मानी छिन महि भई पराई ॥
कहु नानक यह सोच रही मनि हरि जसु कबहू न गाई ॥२॥२॥

अर्थ: हे माँ! जिस धन-पदार्थों को मनुष्य हमेशा अपना समझे रखता है (जब मौत आती है, वह धन-पदार्थ) एक छिन में बेगाना हो जाता है। हे नानक! कहु: उस वक्त मनुष्य के

शब्द नंबर ४६ : राग मारू : अंग १००८

माई मै मन को मानु न तिआगिओ ॥
माइआ के मदि जनमु सिराइओ राम भजनि नही लागिओ ॥१॥ रहाउ॥

अर्थ: हे माँ! (जब से मैंने गुरु-चरणों में प्यार डाला है, तब से मैं पछता रहा हूँ कि) मैंने अपने मन का अहंकार नहीं छोड़ा। माया के नशे में मैंने अपनी उम्र गुजार दी, और, परमात्मा के भजन में ना लगा।1। रहाउ।

जम को डंडु परिओ सिर ऊपरि तब सोवत तै जागिओ ॥
कहा होत अब कै पछुताए छूटत नाहिन भागिओ ॥१॥

अर्थ: (हे भाई! मनुष्य माया की नींद में गाफिल पड़ा रहता है) जब जमदूत का डंडा (इस के) सिर पर बजता है, तब (माया के मोह की नींद में से) सोया हुआ जागता है। पर उस वक्त के पछतावे से कुछ सँवरता नहीं, (क्योंकि उस समय जमों से) भागने पर बचाव नहीं हो सकता।1।

इह चिंता उपजी घट महि जब गुर चरनन अनुरागिओ ॥
सुफलु जनमु नानक तब हूआ जउ प्रभ जस महि पागिओ ॥२॥३॥

अर्थ: हे भाई! जब मनुष्य गुरु के चरणों में प्यार डालता है, तब उसके हृदय में यह फुरना उठता है (कि प्रभु के भजन के बिना उम्र व्यर्थ ही बीतती रही)। हे नानक! मनुष्य की जिंदगी कामयाब तब ही होती है जब (यह गुरु की शरण पड़ कर) परमात्मा की महिमा में जुड़ता है।2।3।

अंग ११८६

१ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

अकाल पुरख एक है , जो सतगुर की क्रपा से मिलता हैं ॥

राग बसंतु महला ९ ॥

शब्द नंबर ४७ : राग बसंतु : अंग ११८६

साधो इहु तनु मिथिआ जानउ ॥
या भीतरि जो रामु बसतु है साचो ताहि पछानो ॥१॥ रहाउ॥

अर्थ: हे संत जनो! इस शरीर को नाशवान समझो। इस शरीर में जो पदार्थ बस रहा है, (सिर्फ) उसको सदा कायम रहने वाला जानो।1। रहाउ।

इहु जगु है स्मपति सुपने की देखि कहा ऐडानो ॥
संगि तिहारै कछू न चालै ताहि कहा लपटानो ॥१॥

अर्थ: हे भाई! यह जगत उस धन के समान ही है जो सपने में मिल जाता है (और, जागते ही खत्म हो जाता है) (इस जगत को धन को) देख के अहंकार क्यों करता है? यहाँ कोई भी चीज़ (अंत समय में) तेरे साथ नहीं जा सकती। फिर इससे क्यों चिपका हुआ है?।1।

उसतति निंदा दोऊ परहरि हरि कीरति उरि आनो ॥
जन नानक सभ ही मै पूरन एक पुरख भगवानो ॥२॥१॥

अर्थ: हे भाई! किसी की खुशामद किसी की निंदा- ये दोनों काम छोड़ दे। सिर्फ परमात्मा की महिमा (अपने) हृदय में बसाओ। हे दास नानक! (कहः हे भाई!) सिर्फ वह भगवान पुरख ही (सलाहने-योग्य है जो) सब जीवों में व्यापक है।2।1।

शब्द नंबर ४८ : राग बसंतु : अंग ११८६

पापी हीऐ मै कामु बसाइ ॥
मनु चंचलु या ते गहिओ न जाइ ॥१॥ रहाउ॥

अर्थ: हे भाई! पापों में फसाने वाली काम-वासना (मनुष्य के) हृदय में टिकी रहती है, इस वास्ते (मनुष्य का) चंचल मन काबू में नहीं आ सकता।1। रहाउ।

जोगी जंगम अरु संनिआस ॥
सभ ही परि डारी इह फास ॥१॥

अर्थ: हे भाई! जोगी जंगम और सन्यासी (जो अपनी तरफ़ से माया का) त्याग कर गए हैं: इस सबके ऊपर ही (माया ने काम-वासना का) यह फंदा फेंका हुआ है।1।

जिहि जिहि हरि को नामु सम्हारि ॥
ते भव सागर उतरे पारि ॥२॥

अर्थ: हे भाई! जिस जिस मनुष्य ने परमात्मा का नाम अपने हृदय में बसाया है, वे सभी संसार-समुंदर (के विकारों) से पार लांघ जाते हैं।2।

जन नानक हरि की सरनाइ ॥
दीजै नामु रहै गुन गाइ ॥३॥२॥

अर्थ: हे नानक! परमात्मा का दास परमात्मा की शरण पड़ा रहता है (परमात्मा के दर पर वह अरजोई करता रहता है: हे प्रभु! अपने दास को अपना) नाम दे (ताकि तेरा दास तेरे) गुण गाता रहे (इस तरह वह कामादिक विकारों की मार से बचा रहता है)।3।2।

शब्द नंबर ४९ : राग बसंतु : अंग ११८६

माई मै धनु पाइओ हरि नामु ॥
मनु मेरो धावन ते छूटिओ करि बैठो बिसरामु ॥१॥ रहाउ॥

अर्थ: हे (मेरी) माँ! (जब का गुरु की शरण पड़ कर) मैंने नाम-धन हासिल किया है, मेरा मन (माया की खातिर) दौड़-भाग करने से बच गया है, (अब मेरा मन नाम-धन में) ठिकाना बना के बैठ गया है।1। रहाउ।

माइआ ममता तन ते भागी उपजिओ निरमल गिआनु ॥
लोभ मोह एह परसि न साकै गही भगति भगवान ॥१॥

अर्थ: हे मेरी माँ! (गुरु की किरपा से मेरे अंदर) शुद्ध-स्वरूप-परमात्मा के साथ गहरी सांझ बन गई है (जिसके कारण) मेरे शरीर में से माया जोड़ने की (धन एकत्र करने की) लालसा दूर हो गई है। (जब से मैंने) भगवान की भक्ति हृदय में बसाई है लोभ और मोह ये मेरे ऊपर अपना प्रभाव नहीं डाल सकते।1।

जनम जनम का संसा चूका रतनु नामु जब पाइआ ॥
त्रिसना सकल बिनासी मन ते निज सुख माहि समाइआ ॥२॥

अर्थ: हे मेरी माँ! जब से (गुरु की कृपा से) मैंने परमात्मा का अमूल्य नाम पाया है, मेरा जन्मों-जन्मांतरों का सहम दूर हो गया है; मेरे मन में से सारी तृष्णा समाप्त हो गई है, अब मैं उस आनंद में टिका रहता हूँ जो सदा मेरे साथ बना रहने वाला है।2।

जा कउ होत दइआलु किरपा निधि सो गोबिंद गुन गावै ॥
कहु नानक इह बिधि की स्मपै कोऊ गुरमुखि पावै ॥३॥३॥

अर्थ: हे माँ! कृपा का खजाना गोबिंद जिस मनुष्य पर दयावान होता है, वह मनुष्य उसके गुण गाता रहता है। हे नानक! कहः (हे माँ!) कोई विरला मनुष्य इस किस्म का धन गुरु के सन्मुख रह के हासिल करता है।3।3।

शब्द नंबर ५० : राग बसंतु : अंग ११८६

मन कहा बिसारिओ राम नामु ॥
तनु बिनसै जम सिउ परै कामु ॥१॥ रहाउ॥

अर्थ: हे मन! तू परमात्मा का नाम क्यों भुलाए बैठा है? (जब) शरीर नाश हो जाता है, (तब परमात्मा के नाम के बिना) जमों से वास्ता पड़ता है।1। रहाउ।

इहु जगु धूए का पहार ॥
तै साचा मानिआ किह बिचारि ॥१॥

अर्थ: हे मन! यह संसार (तो, मानो) धूएँ का पहाड़ है (जिसको हवा का एक बुल्ला उड़ा के ले जाता है)। हे मन! तू क्या समझ के (इस जगत को) सदा कायम रहने वाला माने बैठा है?।1।

धनु दारा स्मपति ग्रेह ॥
कछु संगि न चालै समझ लेह ॥२॥

अर्थ: हे मन! (अच्छी तरह समझ ले कि) धन, स्त्री, जयदाद, घर- इनमें से कोई भी चीज़ (मौत के वक्त जीव के) साथ नहीं जाती।2।

इक भगति नाराइन होइ संगि ॥
कहु नानक भजु तिह एक रंगि ॥३॥४॥

अर्थ: हे नानक! कह: (हे भाई!) सिर्फ परमात्मा की भक्ति ही मनुष्य के साथ रहती है (इसलिए) सिर्फ परमात्मा के प्यार में (टिक के) उसका भजन किया कर।3।4।

शब्द नंबर ५१ : राग बसंतु : अंग ११८७

कहा भूलिओ रे झूठे लोभ लाग ॥
कछु बिगरिओ नाहिन अजहु जाग ॥१॥ रहाउ॥

अर्थ: हे भाई! नाशवान दुनिया के लोभ में फंस के (हरि-नाम से टूट के) कहाँ भटकता फिरता है? अब तो समझदार बन, (और, परमात्मा का नाम जपा कर। अगर बाकी की उम्र स्मरण में गुजार ले, तो भी तेरा) कुछ बिगड़ा नहीं।1। रहाउ।

सम सुपनै कै इहु जगु जानु ॥
बिनसै छिन मै साची मानु ॥१॥

अर्थ: हे भाई! इस जगत को सपने (में देखे पदार्थों) के बराबर समझ। इह बात सच्ची मान कि (यह जगत) एक छिन में नाश हो जाता है।1।

संगि तेरै हरि बसत नीत ॥
निस बासुर भजु ताहि मीत ॥२॥

अर्थ: हे मित्र! परमात्मा सदा तेरे साथ बसता है। तू दिन-रात उसका ही भजन किया कर।2।

बार अंत की होइ सहाइ ॥
कहु नानक गुन ता के गाइ ॥३॥५॥

अर्थ: हे नानक! कह: (हे भाई!) आखिरी समय में परमात्मा ही मददगार बनता है। तू (सदा) उसके गुण गाया कर।3।5

अंग १२३१

१ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

अकाल पुरख एक है , जो सतगुर की क्रपा से मिलता हैं ॥

राग सारंग महला ९ ॥

शब्द नंबर ५२ : राग सारंग : अंग १२३१

हरि बिनु तेरो को न सहाई ॥
कां की मात पिता सुत बनिता को काहू को भाई ॥१॥ रहाउ॥

अर्थ: हे भाई! परमात्मा के बिना तेरा (और) कोई भी सहायता करने वाला नहीं है। हे भाई! कौन किसी की माँ? कौन किसी का पिता? कौन किसी का पुत्र? कौन किसी की पत्नी? (जब शरीर से साथ समाप्त हो जाता है तब) कौन किसी का भाई बनता है? (कोई नहीं)।1। रहाउ।

धनु धरनी अरु स्मपति सगरी जो मानिओ अपनाई ॥
तन छूटै कछु संगि न चालै कहा ताहि लपटाई ॥१॥

अर्थ: हे भाई! यह धन धरती सारी मायश जिन्हें (तू) अपनी समझे बैठा है, जब शरीर से साथ छूटता है, कोई भी चीज़ (जीव के) साथ नहीं जाती। फिर जीव क्यों इनके साथ चिपका रहता है?।1।

दीन दइआल सदा दुख भंजन ता सिउ रुचि न बढाई ॥
नानक कहत जगत सभ मिथिआ जिउ सुपना रैनाई ॥२॥१॥

अर्थ: हे भाई! जो प्रभु गरीबों पर दया करने वाला है, जो सदा (जीवों के) दुखों का नाश करने वाला है, तू उससे प्यार नहीं बढ़ाता। नानक कहता है: हे भाई! जैसे रात का सपना होता है वैसे ही सयारा जगत नाशवान है।2।1।

शब्द नंबर ५३ : राग सारंग : अंग १२३१

कहा मन बिखिआ सिउ लपटाही ॥
या जग महि कोऊ रहनु न पावै इकि आवहि इकि जाही ॥१॥ रहाउ॥

अर्थ: हे मन! तू क्यों माया से (ही) चिपका रहता है? (देख) इस दुनिया में (सदा के लिए) कोई भी टिका नहीं रह सकता। अनेक पैदा होते रहते हैं, अनेक ही मरते रहते हैं।1। रहाउ।

कां को तनु धनु स्मपति कां की का सिउ नेहु लगाही ॥
जो दीसै सो सगल बिनासै जिउ बादर की छाही ॥१॥

अर्थ: हे मन (देख) सदा के लिए ना किसी का शरीर रहता है, ना धन रहता है, ना माया रहती है। तू किससे प्यार बनाए बैठा है? जैसे बादलों की छाया है, वैसे ही जो कुछ दिख रहा है सभ नाशवान है।1।

तजि अभिमानु सरणि संतन गहु मुकति होहि छिन माही ॥
जन नानक भगवंत भजन बिनु सुखु सुपनै भी नाही ॥२॥२॥

अर्थ: हे मन! अहंकार छोड़, और, संत जनों की शरण पड़। (इस तरह) एक छिन में तू (माया के बंधनो से) स्वतंत्र हो जाएगा। हे दास नानक! (कह: हे मन!) परमात्मा के भजन के बिना कभी सपने में भी सुख नहीं मिलता।2।2।

शब्द नंबर ५४ : राग सारंग : अंग १२३१

कहा नर अपनो जनमु गवावै ॥
माइआ मदि बिखिआ रसि रचिओ राम सरनि नही आवै ॥१॥ रहाउ॥

अर्थ: हे भाई! पता नहीं मनुष्य क्यों अपना जीवचन व्यर्थ में बरबाद करता है। माया की मस्ती में माया के स्वाद में व्यस्त रहता है, और, परमात्मा की शरण नहीं पड़ता।1। रहाउ।

इहु संसारु सगल है सुपनो देखि कहा लोभावै ॥
जो उपजै सो सगल बिनासै रहनु न कोऊ पावै ॥१॥

अर्थ: हे भाई! यह सारा जगत सपने जैसा है, इसको देख के, पता नहीं, मनुष्य क्यों लोभ में फंस जाता है। यहाँ तो जो कोई पैदा होता है वह हरेक ही नाश हो जाता है। यहाँ सदा के लिए कोई नहीं टिक सकता।1।

मिथिआ तनु साचो करि मानिओ इह बिधि आपु बंधावै ॥
जन नानक सोऊ जनु मुकता राम भजन चितु लावै ॥२॥३॥

अर्थ: हे भाई! यह शरीर नाशवान है, पर जीव इसको सदा कायम रहने वाला समझे रहता है, इस तरह अपने आप को (मोह की फंदों में) फसाए रखता है। हे दास नानक! वही मनुष्य मोह के बंधनो से स्वतंत्र रहता है, जो परमात्मा के भजन में अपना चित्त जोड़ के रखता है।2।3।

शब्द नंबर ५५ : राग सारंग : अंग १२३१

मन करि कबहू न हरि गुन गाइओ ॥
बिखिआसकत रहिओ निसि बासुर कीनो अपनो भाइओ ॥१॥ रहाउ॥

अर्थ: हे प्रभु! मैं मन लगा के कभी भी तेरे गुण नहीं गाता रहा। मैं दिन-रात माया में ही मगन रहा, वही कुछ करता रहा, जो मुझे अपने आप को अच्छा लगता था।1। रहाउ।

गुर उपदेसु सुनिओ नहि काननि पर दारा लपटाइओ ॥
पर निंदा कारनि बहु धावत समझिओ नह समझाइओ ॥१॥

अर्थ: हे हरि! मैंने कानों से गुरु की शिक्षा (कभी) नहीं सुनी, पराई स्त्री के लिए काम-वासना रखता रहा। दूसरों की निंदा करने के लिए बहुत दौड़-भाग करता रहा। समझाने पर भी मैं (कभी) नहीं समझा (कि ये काम बुरा है)।1।

कहा कहउ मै अपुनी करनी जिह बिधि जनमु गवाइओ ॥
कहि नानक सभ अउगन मो महि राखि लेहु सरनाइओ ॥२॥४॥३॥१३॥१३९॥४॥१५९॥

अर्थ: हे हरि! जिस तरह मैंने अपना जीवन व्यर्थ गवा लिया, वह मैं कहाँ तब अपनी करतूत बताऊँ? नानक कहता है: हे प्रभु! मेरे अंदर सारे अवगुण ही हैं। मुझे अपनी शरण में रख।2।4।3।13।139।4।159।

अंग १३५२

ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

अकाल पुरख एक है , जो सतगुर की क्रपा से मिलता हैं ॥

राग जैजावंती महला ९ ।।

शब्द नंबर ५६ : राग जैजावंती : अंग १३५२

रामु सिमरि रामु सिमरि इहै तेरै काजि है ॥
माइआ को संगु तिआगु प्रभ जू की सरनि लागु ॥
जगत सुख मानु मिथिआ झूठो सभ साजु है ॥१॥ रहाउ॥

अर्थ: हे भाई! परमात्मा (का नाम) स्मरण किया कर, परमात्मा का नाम स्मरण किया कर। यह (स्मरण) ही तेरे काम में (आने वाला) है। हे भाई! माया के मोह छोड़ दे, परमात्मा की शरण पड़ा रह। हे भाई! दुनिया के सुखों को नाशवान समझ। जगत का यह सारा पसारा (ही) साथ छोड़ जाने वाला है।1। रहाउ।

सुपने जिउ धनु पछानु काहे परि करत मानु ॥
बारू की भीति जैसे बसुधा को राजु है ॥१॥

अर्थ: हे भाई! इस धन को सपने (में मिले पदार्थों) की तरह समझ (जाग खुलते ही वह पदार्थ अलोप हो जाते हैं। बता,) तू किस पर अहंकार करता है? (सारी) धरती का राज (भी) रेत की दीवार जैसा ही है।1।

नानकु जनु कहतु बात बिनसि जैहै तेरो गातु ॥
छिनु छिनु करि गइओ कालु तैसे जातु आजु है ॥२॥१॥

अर्थ: हे भाई! दास नानक (तुझे यह) बात बताता है कि तेरा (तो अपना यह मिथा हुआ) शरीर (भी) नाश हो जाएगा। (देख, जैसे तेरी उम्र का) कल (का दिन) छिन-छिन करके बीत गया है, वैसे ही आज (का दिन भी) गुजरता जा रहा है।2।1।

शब्द नंबर ५७ : राग जैजावंती : अंग १३५२

रामु भजु रामु भजु जनमु सिरातु है ॥
कहउ कहा बार बार समझत नह किउ गवार ॥
बिनसत नह लगै बार ओरे सम गातु है ॥१॥ रहाउ॥

अर्थ: हे भाई! परमात्मा का भजन किया कर, परमात्मा का भजन करा कर। मनुष्य जनम गुजरता जा रहा है। हे मूर्ख! मैं (तुझे) बार-बार क्या कहूँ? तू क्यों नहीं समझता? (तेरा यह) शरीर (होने में) ओले जैसा ही है (इसके) नाश होने (पिघलने) में देर नहीं लगती।1। रहाउ।

सगल भरम डारि देहि गोबिंद को नामु लेहि ॥
अंति बार संगि तेरै इहै एकु जातु है ॥१॥

अर्थ: हे भाई! सारी भटकनें छोड़ दे, परमात्मा का नाम जपा कर। आखिरी समय में तेरे साथ सिर्फ यह नाम ही जाने वाला है।1।

बिखिआ बिखु जिउ बिसारि प्रभ कौ जसु हीए धारि ॥
नानक जन कहि पुकारि अउसरु बिहातु है ॥२॥२॥

अर्थ: हे भाई! माया (का मोह अपने अंदर से) जहर की तरह भुला दे। परमात्मा की महिमा (अपने) हृदय में बसाए रख। दास नानक (तुझे) पुकार-पुकार के कह रहा है, (मनुष्य-जिंदगी का समय) बीतता जा रहा है।2।2

शब्द नंबर ५८ : राग जैजावंती : अंग १३५२

रे मन कउन गति होइ है तेरी ॥
इह जग महि राम नामु सो तउ नही सुनिओ कानि ॥
बिखिअन सिउ अति लुभानि मति नाहिन फेरी ॥१॥ रहाउ॥

अर्थ: हे मन! (तू कभी सोचता नहीं कि) तेरी क्या दशा होगी। इस जगत में (तेरा असल साथी) परमात्मा का नाम (ही) है, वह (नाम) तूने कभी ध्यान से नहीं सुना। तू विषौ- (विकारों) में बहुत (ज्यादा) फसा रहता है, तू (अपनी) तवज्जो (इनकी ओर से कभी) पलटता नही।1। रहाउ।

मानस को जनमु लीनु सिमरनु नह निमख कीनु ॥
दारा सुख भइओ दीनु पगहु परी बेरी ॥१॥

अर्थ: हे भाई! तूने मनुष्य का जन्म (तो) हासिल कर लिया, पर कभी रत्ती भर समय के लिए भी परमात्मा का स्मरण नहीं किया। तू सदा स्त्री के सुखों के अधीन ही हुआ रहता है। तेरे पैरों में (स्त्री के मोह की) बेड़ी पड़ी रहती है।1।

नानक जन कहि पुकारि सुपनै जिउ जग पसारु ॥
सिमरत नह किउ मुरारि माइआ जा की चेरी ॥२॥३॥

अर्थ: हे भाई! दास नानक (तुझे) पुकार के कहता है कि यह जगत का पसारा सपने जैसा ही है। यह माया जिसकी दासी है तू उस परमात्मा का स्मरण क्यों नहीं करता।2।3।

शब्द नंबर ५९ : राग जैजावंती : अंग १३५२

बीत जैहै बीत जैहै जनमु अकाजु रे ॥
निसि दिनु सुनि कै पुरान समझत नह रे अजान ॥
कालु तउ पहूचिओ आनि कहा जैहै भाजि रे ॥१॥ रहाउ॥

अर्थ: हे भाई! (परमात्मा की भक्ति के बिना) मानव जीवन (का समय) जनम-उद्देश्य हासिल किए बिना ही गुजरता जा रहा है, लांघता जा रहा है। हे मूर्ख! रात-दिन पुराण (आदिक पुस्तकों की कहानियाँ) सुन के (भी) तू नहीं समझता (कि यहाँ सदा बैठे नहीं रहना)। मौत (का समय) तो (नज़दीक) आ पहुँचा है (बता, तू इस ओर से) भाग के कहाँ चला जाएगा।1। रहाउ।

असथिरु जो मानिओ देह सो तउ तेरउ होइ है खेह ॥
किउ न हरि को नामु लेहि मूरख निलाज रे ॥१॥

अर्थ: हे मूर्ख! हे बे-शर्म! जिस (अपने) शरीर को तू सदा कायम रहने वाला समझे बैठा है, तेरा वह (शरीर) तो (अवश्य) राख हो जाएगा। (फिर) तू क्यों परमात्मा का नाम नहीं जपता?।1।

राम भगति हीए आनि छाडि दे तै मन को मानु ॥
नानक जन इह बखानि जग महि बिराजु रे ॥२॥४॥

अर्थ: दास नानक (तुझे बार-बार) यही बात कहता है कि (अपने) मन का अहंकार छोड़ दे, परमात्मा की भक्ति (अपने) हृदय में बसा ले। इस तरह का सदाचारी जीवन जी।2।4।

१ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

अकाल पुरख एक है , जो सतगुर की क्रपा से मिलता हैं ॥

सलोक महला ९

1

गुन गोबिंद गाइओ नही जनमु अकारथ कीनु ॥
कहु नानक हरि भजु मना जिह बिधि जल कउ मीनु ॥१॥

अर्थ: हे भाई! अगर तूने परमात्मा के गुण कभी नहीं गाए, तो तूने अपना मानव जन्म निकम्मा कर लिया। हे नानक! कह: हे मन! परमात्मा का भजन किया कर (और, उसको इस तरह जिंदगी का आसरा बना) जैसे पानी को मछली (अपनी जिंद का आसरा बनाए रखती है)।1।

2

बिखिअन सिउ काहे रचिओ निमख न होहि उदासु ॥
कहु नानक भजु हरि मना परै न जम की फास ॥२॥

अर्थ: हे भाई! तू विषियों के साथ (इतना) मस्त क्यों रहता है? तू आँख झपकने जितने समय के लिए भी विषियों से चिक्त नहीं हटाता। हे नानक! कह: हे मन! परमात्मा का भजन किया कर। (भजन की इनायत से) जमों का फंदा (गले में) नहीं पड़ता।2।

3

तरनापो इउ ही गइओ लीओ जरा तनु जीति ॥
कहु नानक भजु हरि मना अउध जातु है बीति ॥३॥

अर्थ: हे भाई! (तेरी) जवानी बेपरवाही में ही गुजर गई, (अब) बुढापे ने तेरे शरीर को जीत लिया है। हे नानक! कह: हे मन! परमात्मा का भजन किया कर। उम्र गुजरती जा रही है।3।

4.

बिरधि भइओ सूझै नही कालु पहूचिओ आनि ॥
कहु नानक नर बावरे किउ न भजै भगवानु ॥४॥

अर्थ: हे नानक! कह: हे झल्ले मनुष्य! तू क्यों परमात्मा का भजन नहीं करता? (देख, अब तू) बुड्ढा हो गया है (पर, तुझे अभी भी यह) समझ नहीं आ रही कि मौत (सिर पर) आ पहुँची है।4।

5.

धनु दारा स्मपति सगल जिनि अपुनी करि मानि ॥

इन मै कछु संगी नही नानक साची जानि ॥५॥

अर्थ: हे नानक! (कह: हे भाई!) धन, स्त्री, सारी जायदाद- (इसको) अपनी कर के ना मान। ये बात सच्ची समझ कि इन सभी में से कोई एक भी तेरा साथी नहीं बन सकता।5।

6.

पतित उधारन भै हरन हरि अनाथ के नाथ ॥
कहु नानक तिह जानीऐ सदा बसतु तुम साथि ॥६॥

अर्थ: हे नानक! कह: (हे भाई!) प्रभु जी विकारियों को विकारों से बचाने वाले हैं, सारे डर दूर करने वाले हैं, और अनाथों के नाथ हैं। हे भाई! उस (प्रभु) को (इस प्रकार) समझना चाहिए कि वह सदा तेरे साथ बसता है।6।

7.

तनु धनु जिह तो कउ दीओ तां सिउ नेहु न कीन ॥
कहु नानक नर बावरे अब किउ डोलत दीन ॥७॥

अर्थ: हे नानक! कह: हे झल्ले मनुष्य! जिस (परमात्मा) ने तुझे शरीर दिया, धन दिया, तूने उसके साथ प्यार नहीं डाला। फिर अब दीन-हीन बन के (आतुर हो के) घबराया क्यों फिरता है (भाव, उस हरि को ना याद करने के कारण घबराना तो हुआ ही)।7।

8.

तनु धनु स्मपै सुख दीओ अरु जिह नीके धाम ॥
कहु नानक सुनु रे मना सिमरत काहि न रामु ॥८॥

अर्थ: हे नानक! कह: हे मन! सुन, जिस (परमात्मा) ने शरीर दिया, धन दिया, जायदाद दी, सुख दिए और सुंदर घर दिए, उस परमात्मा का तू स्मरण क्यों नहीं करता?।8।

9.

सभ सुख दाता रामु है दूसर नाहिन कोइ ॥
कहु नानक सुनि रे मना तिह सिमरत गति होइ ॥९॥

अर्थ: हे नानक! कह: हे मन! परमात्मा (ही) सारे सुख देने वाला है, (उसके बराबर का और) कोई दूसरा नहीं है, उस (का नाम) स्मरण करते हुए ऊँची आत्मिक अवस्था (भी) प्राप्त हो जाती है।9।

10.

जिह सिमरत गति पाईऐ तिह भजु रे तै मीत ॥
कहु नानक सुनु रे मना अउध घटत है नीत ॥१०॥

अर्थ: हे मित्र! तू उस परमात्मा का भजन किया कर, जिसका नाम स्मरण करने से ऊँची आत्मिक अवस्था प्राप्त होती है। हे नानक! कह: हे मन! सुन, उम्र घटती जा रही है (परमात्मा का स्मरण ना बिसार)।10।

11.

पांच तत को तनु रचिओ जानहु चतुर सुजान ॥
जिह ते उपजिओ नानका लीन ताहि मै मानु ॥११॥

अर्थ: हे नानक! (कह:) हे चतुर मनुष्य! हे समझदार मनुष्य! तू जानता है कि (तेरा ये) शरीर (परमात्मा ने) पाँच तत्वों से बनाया है। (ये भी) यकीन जान कि जिस तत्वों से (ये शरीर) बना है (दोबारा) उनमें ही लीन हो जाएगा (फिर इस शरीर के झूठे मोह में फंस के परमात्मा का स्मरण क्यों भुला रहा है?।11।

12.

घट घट मै हरि जू बसै संतन कहिओ पुकारि ॥
कहु नानक तिह भजु मना भउ निधि उतरहि पारि ॥१२॥

अर्थ: हे नानक! कह: हे मन! संत जनों ने ऊँचा-ऊँचा पुकार के बता दिया है कि परमात्मा हरेक शरीर में बस रहा है। तू उस (परमात्मा) का भजन किया कर, (भजन की इनायत से) संसार-समुंदर से तू पार लांघ जाएगा।12।

13.

सुखु दुखु जिह परसै नही लोभु मोहु अभिमानु ॥
कहु नानक सुनु रे मना सो मूरति भगवान ॥१३॥

अर्थ: हे नानक! कह: हे मन! सुन, जिस मनुष्य (के हृदय) को सुख-दुख नहीं छू सकता, लोभ मोह अहंकार नहीं पोह सकता (भाव, जो मनुष्य सुख-दुख के समय आत्मिक जीवन से नहीं डोलता, जिस पर लोभ-मोह-अहंकार अपना जोर नहीं डाल सकता) वह मनुष्य (साक्षात) परमात्मा का रूप है।13।

14.

उसतति निंदिआ नाहि जिहि कंचन लोह समानि ॥
कहु नानक सुनि रे मना मुकति ताहि तै जानि ॥१४॥

अर्थ: हे नानक! कह: हे मन! सुन, जिस मनुष्य (के मन) को स्तुति नहीं (डाँवा-डोल कर सकती), जिसको सोना और लोहा एक समान (दिखते हैं, भाव, जो लालच में नहीं फंसता), यह बात (पक्की) समझो कि उसको मोह से छुटकारा मिल चुका है।14।

15.

हरखु सोगु जा कै नही बैरी मीत समानि ॥
कहु नानक सुनि रे मना मुकति ताहि तै जानि ॥१५॥

अर्थ: हे नानक! कह: हे मन! सुन, जिस मनुष्य के हृदय में खुशी-ग़मी अपना जोर नहीं डाल सकती, जिसको वैरी और मित्र एक जैसे (मित्र ही) प्रतीत होते हैं, तू ये बात पक्की समझ कि उसको माया के मोह से निजात मिल चुकी है।15।

16.

भै काहू कउ देत नहि नहि भै मानत आन ॥
कहु नानक सुनि रे मना गिआनी ताहि बखानि ॥१६॥

अर्थ: हे नानक! कह: हे मन! सुन, जो मनुष्य किसी को (कोई) डरावे नहीं देता, और किसी से भयभीत (भी) नहीं होता (धमकियों डरावों से घबराता नहीं) उसको आत्मिक जीवन की सूझ वाला समझ।16।

17.

जिहि बिखिआ सगली तजी लीओ भेख बैराग ॥
कहु नानक सुनु रे मना तिह नर माथै भागु ॥१७॥

अर्थ: हे नानक! कह: हे मन! सुन, जिस (मनुष्य) ने (काम क्रोध लोभ मोह अहंकार निंदा ईष्या आदि) सारी की सारी माया त्याग दी, (उसने ही सही) वैराग का (सही) भेस धारण किया (समझो)। हे मन! उस मनुष्य के माथे पर (अच्छे) भाग्य (जागे समझ)।17।

18.

जिहि माइआ ममता तजी सभ ते भइओ उदासु ॥
कहु नानक सुनु रे मना तिह घटि ब्रहम निवासु ॥१८॥

अर्थ: हे नानक! कह: हे मन! सुन, जिस (मनुष्य) ने माया का मोह छोड़ दिया, (जो मनुष्य माया के कामादिक) सारे विकारों से उपराम हो गया, उसके दिल में (प्रत्यक्ष तौर पर) परमात्मा का निवास हो जाता है।

19.

जिहि प्रानी हउमै तजी करता रामु पछानि ॥
कहु नानक वहु मुकति नरु इह मन साची मानु ॥१९॥

अर्थः जिस मनुष्य ने कर्तार विधाता के साथ गहरी सांझ डाल के (अपने अंदर से) अहंकार त्याग दिया, हे नानक! कहः हे मन! ये बात सच्ची समझ कि वह मनुष्य (ही) मुक्त है।19।

20.

भै नासन दुरमति हरन कलि मै हरि को नामु ॥
निसि दिनु जो नानक भजै सफल होहि तिह काम ॥२०॥

अर्थः हे नानक! (कहः हे भाई!) इस कष्ट भरे संसार में परमात्मा का नाम (ही) सारे डर नाश करने वाला है, खोटी मति दूर करने वाला है। जो मनुष्य प्रभु का नाम रात दिन जपता रहता है उसके सारे काम सफल हो जाते हैं।20।

21.

जिहबा गुन गोबिंद भजहु करन सुनहु हरि नामु ॥
कहु नानक सुनि रे मना परहि न जम कै धाम ॥२१॥

अर्थः हे भाई! (अपनी) जीभ से परमात्मा के गुणों का जाप किया करो, (अपने) कानों से परमात्मा का नाम सुना करो। हे नानक! कहः हे मन! (जो मनुष्य नाम जपते हैं, वे) जमों के वश नहीं पड़ते।21।

22.

जो प्रानी ममता तजै लोभ मोह अहंकार ॥
कहु नानक आपन तरै अउरन लेत उधार ॥२२॥

अर्थः हे नानक! कहः (हे भाई!) जो मनुष्य (अपने अंदर से माया की) ममता त्यागता है, लोभ मोह और अहंकार को दूर करता है, वह स्वयं (भी इस संसार-समुंदर से) पार लांघ जाता है और-और लोगों को भी (विकारों से) बचा लेता है।22।

23.

जिउ सुपना अरु पेखना ऐसे जग कउ जानि ॥
इन मै कछु साचो नही नानक बिनु भगवान ॥२३॥

अर्थः हे नानक! (कहः हे भाई!) जैसे (सोए हुए) सपना (आता है) और (और उस सपने में कई पदार्थ हम) देखते हैं, वैसे ही इस जगत को समझ ले। परमात्मा के नाम के बिना (जगत में दिखाई दे रहे) इन (पदार्थों) में कोई भी पदार्थ सदा साथ निभाने वाला नहीं है।23।

24.

निसि दिनु माइआ कारने प्रानी डोलत नीत ॥

कोटन मै नानक कोऊ नाराइनु जिह चीति ॥२४॥

अर्थ: हे नानक! (कहः हे भाई!) माया (इकट्ठी करने) की खातिर मनुष्य सदा रात-दिन भटकता फिरता है। करोड़ों (लोगों) में कोई विरला (ऐसा होता) है, जिसके मन में परमात्मा की याद टिकी होती है।24।

25.

जैसे जल ते बुदबुदा उपजै बिनसै नीत ॥
जग रचना तैसे रची कहु नानक सुनि मीत ॥२५॥

अर्थ: हे नानक! कहः हे मित्र! सुन, जैसे पानी से सदा बुलबुला पैदा होता है और नाश होता रहता है, वैसे ही (परमात्मा ने) जगत की (यह) खेल बनाई हुई है।25।

26.

प्रानी कछू न चेतई मदि माइआ कै अंधु ॥
कहु नानक बिनु हरि भजन परत ताहि जम फंध ॥२६॥

अर्थ: पर, माया के नशे में (आत्मिक जीवन से) अंधा हुआ मनुष्य (आत्मिक जीवन के बारे में) कुछ भी नहीं सोचता। हे नानक! कहः परमात्मा के भजन के बिना (ऐसे मनुष्य को) जमों के फंदे पड़े रहते हैं।26।

27.

जउ सुख कउ चाहै सदा सरनि राम की लेह ॥
कहु नानक सुनि रे मना दुरलभ मानुख देह ॥२७॥

अर्थ: हे नानक! कहः हे मन! सुन, ये मनुष्य-शरीर बड़ी मुश्किल से मिलता है (इसको माया की खातिर भटकने में ही नहीं व्यर्थ गवा देना चाहिए)। सो, जो (मनुष्य) आत्मिक आनंद (हासिल करना) चाहता है, तो (उसको चाहिए कि) परमात्मा की शरण पड़ा रहे।27।

28.

माइआ कारनि धावही मूरख लोग अजान ॥
कहु नानक बिनु हरि भजन बिरथा जनमु सिरान ॥२८॥

अर्थ: हे नानक! कहः (हे भाई!) मूर्ख बेसमझ बंदे (निरी) माया (इकट्ठी करने) के लिए भटकते रहते हैं, परमात्मा के भजन के बिना (उनका ये मनुष्य-) जनम व्यर्थ बीत जाता है।28।

29.

जो प्रानी निसि दिनु भजै रूप राम तिह जानु ॥

हरि जन हरि अंतरु नही नानक साची मानु ॥२९॥

अर्थ: हे नानक! कह: (हे भाई!) जो मनुष्य रात-दिन (हर वक्त परमात्मा का नाम) जपता रहता है, उसको परमात्मा का रूप समझो। यह बात सच्ची मानो कि परमात्मा के भक्त और परमात्मा में कोई फर्क नहीं है।29।

30.

मनु माइआ मै फधि रहिओ बिसरिओ गोबिंद नामु ॥
कहु नानक बिनु हरि भजन जीवन कउने काम ॥३०॥

अर्थ: हे नानक! कह: (हे भाई! जिस मनुष्य का) मन (हर समय) माया (के मोह) में फसा रहता है (जिसको) परमात्मा का नाम (सदा) भूला रहता है (बताओ) परमात्मा के भजन के बिना (उसका) जीना किस काम का?।30।

31.

प्रानी रामु न चेतई मदि माइआ कै अंधु ॥
कहु नानक हरि भजन बिनु परत ताहि जम फंध ॥३१॥

अर्थ: हे नानक! कह: (हे भाई!) माया के मोह में (फंस के आत्मिक जीवन से) अंधा हुआ (जो) मनुष्य परमात्मा का नाम याद नहीं करता, परमात्मा के भजन के बिना उसको (उसके गले में) जमों के फंदे पड़े रहते हैं।31।

32.

सुख मै बहु संगी भए दुख मै संगि न कोइ ॥
कहु नानक हरि भजु मना अंति सहाई होइ ॥३२॥

अर्थ: हे नानक! कह: हे मन! परमात्मा का भजन किया कर (परमातमा) अंत समय (में भी) मददगार बनता है। (दुनिया में तो) सुख के समय अनेक मिलने-जुलने वाले बन जाते हैं, पर दुख में कोई भी साथ नहीं होता।32।

33.

जनम जनम भरमत फिरिओ मिटिओ न जम को त्रासु ॥
कहु नानक हरि भजु मना निरभै पावहि बासु ॥३३॥

अर्थ: हे भाई! (परमात्मा का स्मरण भुला के जीव) अनेक जन्मों में भटकता फिरता है, जमों का डर (इसके अंदर से) खत्म नहीं होता। हे नानक! कह: हे मन! परमातमा का भजन करता रहा कर, (भजन की इनायत से) तू उस प्रभु में निवास प्राप्त कर लेगा जिसको कोई डर छू नहीं सकता।33।

34.

जतन बहुतु मै करि रहिओ मिटिओ न मन को मानु ॥
दुरमति सिउ नानक फधिओ राखि लेहु भगवान ॥३४॥

अर्थ: हे नानक! (कह:) हे भगवान! मैं अनेक (और-और) प्रयत्न कर चुका हूँ (उन प्रयत्नों से) मन का अहंकार दूर नहीं होता, (यह मन) खोटी मति से चिपका रहता है। हे भगवान! (तू स्वयं ही) रक्षा कर।34।

35.

बाल जुआनी अरु बिरधि फुनि तीनि अवसथा जानि ॥
कहु नानक हरि भजन बिनु बिरथा सभ ही मानु ॥३५॥

अर्थ: हे नानक! (कह: हे भाई!) बाल-अवस्था, जवानी की अवस्था, और फिर बुढापे की अवस्था- (उम्र की ये) तीन अवस्थाएं समझ ले (जो मनुष्य पर आती है)। (पर, ये) याद रख (कि) परमात्मा के भजन के बिना ये सारी ही व्यर्थ ही जाती हैं।35।

36.

करणो हुतो सु ना कीओ परिओ लोभ कै फंध ॥
नानक समिओ रमि गइओ अब किउ रोवत अंध ॥३६॥

अर्थ: हे नानक! (कह: माया के मोह में) अंधे हो रहे मनुष्य! जो कुछ तूने करना था, वह तूने नहीं किया (सारी उम्र) तू लोभ के फंदे में (ही) फसा रहा। (जिंदगी का सारा) समय (इसी तरह ही) गुजर गया। अब रोता क्यों है? (अब पछताने से क्या फायदा?)।36।

37.

मनु माइआ मै रमि रहिओ निकसत नाहिन मीत ॥
नानक मूरति चित्र जिउ छाडित नाहिन भीति ॥३७॥

अर्थ: हे नानक! (कह:) हे मित्र! जैसे (दीवार पर किसी) मूर्ति का बनाया हुआ चित्र दीवार को नहीं छोड़ता, दीवार के साथ ही चिपका रहता है, वैसे ही जो मन माया (के मोह) में फंस जाता है, (वह इस मोह में से अपने आप ही) नहीं निकल सकता।37।

38.

नर चाहत कछु अउर अउरै की अउरै भई ॥
चितवत रहिओ ठगउर नानक फासी गलि परी ॥३८॥

अर्थ: हे नानक! (कहः) हे भाई! (माया के मोह में फंस के) मनुष्य (प्रभु-नाम-जपने की जगह) कुछ और ही (भाव, माया ही माया) मांगता रहता है। (पर, कर्तार की रजा में) और की और ही हो जाती है (मनुष्य सोचता कुछ है हो कुछ जाता है)। (मनुष्य और लोगों को) ठगने की सोचें सोचता है (लेकिन मौत का) फंदा (उसके) गले में आ पड़ता है।38।

39.

जतन बहुत सुख के कीए दुख को कीओ न कोइ ॥
कहु नानक सुनि रे मना हरि भावै सो होइ ॥३९॥

अर्थ: हे नानक! कहः हे मन! जो कुछ परमात्मा को अच्छा लगता है (अवश्य ही) वह (ही) होता है (जीव भले ही) सुखों (की प्राप्ति) के लिए अनेक जतन करता रहता है, और दुखों के लिए प्रयत्न नहीं करता (पर, फिर भी रजा के अनुसार दुख भी आ ही पड़ते हैं। सुख भी तब ही मिलता है जब प्रभु की रज़ा हो)।39।

40.

जगतु भिखारी फिरतु है सभ को दाता रामु ॥
कहु नानक मन सिमरु तिह पूरन होवहि काम ॥४०॥

अर्थ: जगत भिखारी (हो के) भटकता फिरता है (ये याद नहीं रखता कि) सारे जीवों को दातें देने वाला परमात्मा स्वयं है। हे नानक! कहः हे मन! उस दातार प्रभु का स्मरण करता रहा कर, तेरे सारे काम सफल होते रहेंगे।40।

41.

झूठै मानु कहा करै जगु सुपने जिउ जानु ॥
इन मै कछु तेरो नही नानक कहिओ बखानि ॥४१॥

अर्थ: हे भाई! (पता नहीं मनुष्य) नाशवान दुनिया का मान क्यों करता रहता है। हे भाई! जगत को सपने (में देखे हुए पदार्थों) की तरह (ही) समझो। हे नानक! (कहः हे भाई!) मैं तुझे ठीक बता रहा हूँ कि इन (दिखाई देते पदार्थों) में तेरा (असल साथी) कोई भी पदार्थ नहीं है।41।

42.

गरबु करतु है देह को बिनसै छिन मै मीत ॥
जिहि प्रानी हरि जसु कहिओ नानक तिहि जगु जीति ॥४२॥

अर्थ: हे मित्र! (जिस) शरीर का (मनुष्य सदा) माण करता रहता है (कि यह मेरा अपना है, वह शरीर) एक छिन में ही नाश हो जाता है। (और पदार्थों का मोह तो कहां रहा, अपने इस शरीर का मोह भी झूठा ही है)। हे नानक! जिस मनुष्य ने परमात्मा की महिमा करनी शुरू कर दी, उसने जगत (के मोह) को जीत लिया।42।

43.

जिह घटि सिमरनु राम को सो नरु मुकता जानु ॥
तिहि नर हरि अंतरु नही नानक साची मानु ॥४३॥

अर्थ: हे भाई! जिस मनुष्य के हृदय में परमात्मा का स्मरण (टिका रहता है) उस मनुष्य को (मोह के जाल से) बचा हुआ समझ। हे नानक! (कह: हे भाई!) यह बात ठीक मान कि उस मनुष्य और परमात्मा में कोई फर्क नहीं।43।

44.

एक भगति भगवान जिह प्रानी कै नाहि मनि ॥
जैसे सूकर सुआन नानक मानो ताहि तनु ॥४४॥

अर्थ: हे नानक! (कह: हे भाई!) जिस मनुष्य के मन में परमात्मा की भक्ति नहीं है, उसका शरीर वैसा ही समझ जैसा (किसी) सूअर का शरीर है (या किसी) कुत्ते का शरीर है।44।

45.

सुआमी को ग्रिहु जिउ सदा सुआन तजत नही नित ॥
नानक इह बिधि हरि भजउ इक मनि हुइ इक चिति ॥४५॥

अर्थ: हे नानक! (कह: हे भाई!) एक-मन हो के एक-चित्त हो के परमात्मा का भजन इसी तरीके से किया करो (कि उसका दर कभी छूटे ही ना), जैसे कुत्ता (अपने) मालिक का घर (घर का दरवाजा) सदा (पकड़े रखता है) कभी भी नहीं छोड़ता।45।

46.

तीरथ बरत अरु दान करि मन मै धरै गुमानु ॥
नानक निहफल जात तिह जिउ कुंचर इसनानु ॥४६॥

अर्थः हे नानक! (कहः हे भाई! परमात्मा का भजन छोड़ के मनुष्य) तीर्थ-स्नान करके व्रत रख के, दान-पुण्य कर के (अपने) मन में अहंकार करता है (कि मैं धर्मी बन गया हूँ, पर) उसके (ये सारे किए हुए कर्म इस प्रकार) व्यर्थ (चले जाते हैं) जैसे हाथी का (किया हुआ) स्नान।46।

47.

सिरु क्मपिओ पग डगमगे नैन जोति ते हीन ॥
कहु नानक इह बिधि भई तऊ न हरि रसि लीन ॥४७॥

अर्थः हे नानक! कहः (हे भाई! बुढापा आ जाने पर मनुष्य का) सिर काँपने लग जाता है (चलते हुए) पैर थिड़कने लगते हैं, आँखों की ज्योति मारी जाती है (बुढापे से शरीर की) यह हालत हो जाती है, फिर भी (माया का मोह इतना प्रबल होता है कि मनुष्य) परमात्मा के नाम के स्वाद में मगन नहीं होता।47।

48.

निज करि देखिओ जगतु मै को काहू को नाहि ॥
नानक थिरु हरि भगति है तिह राखो मन माहि ॥४८॥

अर्थः हे नानक! (कहः हे भाई!) मैं जगत को अपना समझ के (ही अब तक) देखता रहा, (पर, यहाँ तो) कोई किसी का भी (सदा के लिए अपना) नहीं है। सदा कायम रहने वाली तो परमात्मा की भक्ति ही है। इस (भक्ति) को (अपने) मन में परो के रख।48।

49.

जग रचना सभ झूठ है जानि लेहु रे मीत ॥
कहि नानक थिरु ना रहै जिउ बालू की भीति ॥४९॥

अर्थः नानक कहता हैः हे मित्र! यह बात सच्ची जान कि जगत की सारी रचना ही नाशवान है। रेत की दीवार की तरह (जगत में) कोई भी चीज़ सदा कायम रहने वाली नहीं है।49।

50.

रामु गइओ रावनु गइओ जा कउ बहु परवारु ॥
कहु नानक थिरु कछु नही सुपने जिउ संसारु ॥५०॥

अर्थः हे नानक! कहः (हे भाई! श्री) राम (चंद्र) कूच कर गया, रावण भी चल बसा जिसको बड़े परिवार वाला कहा जाता है। (यहाँ) कोई भी सदा कायम रहने वाला पदार्थ नहीं है। (यह) जगत सपने जैसा (ही) है।50।

51.

चिंता ता की कीजीऐ जो अनहोनी होइ ॥

इहु मारगु संसार को नानक थिरु नही कोइ ॥५१॥

अर्थ: हे नानक! (कहः हे भाई! मौत आदिक तो) उस (घटना) की चिन्ता करनी चाहिए जो कभी घटित होने वाली ना हो। जगत की तो चाल ही यह है कि (यहाँ) कोई जीव (भी) सदा कायम रहने वाला नहीं है।51।

52.

जो उपजिओ सो बिनसि है परो आजु कै कालि ॥
नानक हरि गुन गाइ ले छाडि सगल जंजाल ॥५२॥

अर्थ: हे नानक! कहः (हे भाई! जगत में तो) जो भी पैदा हुआ है वह (अवश्य) नाश हो जाएगा (हर कोई यहाँ से) आज या कल कूच कर जाने वाला है। (इसलिए माया के मोह के) सारे फंदे उतार के परमात्मा के गुण गाया कर।52।

53.

दोहरा ॥ बलु छुटकिओ बंधन परे कछू न होत उपाइ ॥
कहु नानक अब ओट हरि गज जिउ होहु सहाइ ॥५३॥

अर्थ: हे भाई! (प्रभु से विछुड़ के जब माया के मोह के) फंदे (मनुष्य को) आ पड़ते हैं (उन फंदों को काटने के लिए मनुष्य के अंदर से आत्मिक) शक्ति समाप्त हो जाती है (माया का मुकाबला करने के लिए मनुष्य से) कोई भी उपाय नहीं किया जा सकता। हे नानक! कहः हे हरि! इस (संकट भरे) वक्त में (अब) तेरा ही आसरा है। जैसे तू (तेंदूए से छुड़ाने के लिए) हाथी का मददगार बना, वैसे ही सहाई बन। (भाव, माया के मोह के बंधनो से खलासी पाने के लिए परमातमा के दर पर अरदास ही एक मात्र साधन है)।53।

54.

बलु होआ बंधन छुटे सभु किछु होत उपाइ ॥
नानक सभु किछु तुमरै हाथ मै तुम ही होत सहाइ ॥५४॥

अर्थ: हे भाई! (जब मनुष्य प्रभु के दर पर गिरता है, और माया से मुकाबला करने के लिए उसके अंदर आत्मिक) बल पैदा हो जाता है (तब माया के मोह के) बंधन टूट जाते हैं (मोह का मुकाबला करने के लिए) हरेक उपाय सफल हो सकता है। सो, हे नानक! (कहः हे प्रभु!) सब कुछ तेरे हाथ में है (तेरी पैदा की हुई माया भी तेरे ही अधीन है, इससे बचने के लिए) तू ही मददगार हो सकता है।54।

55.

संग सखा सभि तजि गए कोऊ न निबहिओ साथि ॥
कहु नानक इह बिपति मै टेक एक रघुनाथ ॥५५॥

अर्थ: हे नानक! कहः (जब अंत के समय) सारे संगी-साथी छोड़ जाते हैं, जब कोई भी साथ नहीं निभा सकता, उस (अकेलेपन की) मुसीबत के समय भी सिर्फ परमात्मा का ही सहारा होता है (सो, हे भाई! सदा परमात्मा का नाम स्मरण किया करो)।55।

56.

नामु रहिओ साधू रहिओ रहिओ गुरु गोबिंदु ॥
कहु नानक इह जगत मै किन जपिओ गुर मंतु ॥५६॥

अर्थ: हे नानक! कहः हे भाई! इस दुनिया में जिस किसी (मनुष्य) ने (हरि-नाम स्मरण वाला) गुरु का उपदेश अपने अंदर बसाया है (और नाम जपा है, अंत के समय भी परमात्मा का) नाम (उसके) साथ (रहता) है, (वाणी के रूप में) गुरु उसके साथ रहता है, अकाल-पुरख उसके साथ है।56।

57.

राम नामु उर मै गहिओ जा कै सम नही कोइ ॥
जिह सिमरत संकट मिटै दरसु तुहारो होइ ॥५७॥१॥

अर्थ: हे प्रभु! जिस मनुष्य ने तेरा वह नाम अपने हृदय में बसाया है जिसके बराबर का और कोई नहीं और जिसको स्मरण करने से हरेक दुख-कष्ट दूर हो जाता है, उस मनुष्य को तेरा दर्शन भी हो जाता है।57।1।